केन्द्रीय विद्यालय संगठन
जबलपुर संभाग

अध्ययन सामग्री
–धीमी गति से सीखने वाले बच्चों के लिए–

कक्षा–बारह (हिन्दी केन्द्रिक)

मुख्य संरक्षक

श्री रंगलाल जामुदा

आयुक्त, के.वि.सं.,नई दिल्ली

संरक्षक

श्रीमती व्ही. बिसारिया

सहायक आयुक्त, के.वि.सं., जबलपुर संभाग

परामर्शदाता

श्री व्ही. एम. चेरियन

शिक्षाधिकारी, के.वि.सं., जबलपुर संभाग

मार्गदर्शक

श्री आर. कुमार

प्राचार्य, के0 वि0 मनेन्द्रगढ़

कार्यकर्त्ता

श्री आर. के. कौशिक

पी0जी0टी0 हिन्दी

के0 वि0 मनेन्द्रगढ़

.

विषय–सूची

खण्ड–क

1 अपठित काव्यांश

2. अपठित गद्यांश

खण्ड–ख

3. निबंध–लेखन

4. पत्र–लेखन

खण्ड–ग

5. अभिव्यक्ति और माध्यम –लघुउत्तरीय प्रश्न–

6. फीचर आलेख, रिपोर्ट, संपादकीय, आलेख, इत्यादि

खण्ड–घ

7. काव्यांश पर आधारित अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

8. काव्य–सौंदर्य पर आधारित प्रश्न

9. काव्य पर लघुउत्तरीय प्रश्न

10. गद्यांश पर अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

11. गद्यांश की विषय वस्तु पर प्रश्न

12. वितान पर आधारित वस्तुपरक प्रश्न

13. वितान पर लघुउत्तरीय प्रश्न

14. वितान पर निबंधात्मक प्रश्न

खंड 'क'

अपठित–बोध के अंतर्गत विद्यार्थी को किसी अपठित गद्यांश और पद्यांश को पढ़ कर उस पर आधारित प्रश्नों का उत्तर देना होता है। इन प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व अपठित को अच्छी प्रकार से पढ़ कर समझ लेना चाहिए। जिन प्रश्नों के उत्तर पूछे गए हैं वे उसी में ही छिपे रहते हैं। शीर्षक भी पूछा जाता है। शीर्षक अपठित में व्यक्त भावों के अनुरूप होना चाहिए। शीर्षक कम–से कम शब्दों में लिखना चाहिए। शीर्षक से अपठित का मूल–भाव भी स्पष्ट होना चाहिए।

1 अपठित काव्यांश

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1

देख कर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं।
रह भरोसे भाग्य के दुःख भोग पछताते नहीं।।
काम कितना ही कठिन हो किंतु उकताते नहीं।
भीड़ में चंचल बने जो बीर दिखलाते नहीं।।
हो गए एक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले फले।
काम को आरंभ करके यों नहीं जो छोड़ते।
सामना करके नहीं जो भूल कर मुँह मोड़ते।।
जो गगन के फूल बातों से वृथा नहीं तोड़ते।
संपदा मन से करोड़ों की नहीं जो जोड़ते।।
बन गया हीरा उन्हीं के हाथ से कारबन।
कांच को करके दिखा देते हैं वे उज्ज्वल रतन।।

(क) इस कविता का शीर्षक लिखिए।
(ख) कैसा व्यक्ति असफल होकर दुःख भोगता है ?
(ग) किन व्यक्तियों के बुरे दिन भी भले दिन बन जाते है ?
(घ) 'गगन के फूल बातों से तोड़ने' का आशय स्पष्ट कीजिए।
(ड.) किन लोगों के हाथ से कॉच उज्ज्वल रत्न बन जाता है ?

उत्तर–(क) कर्मवीर।
(ख) जो व्यक्ति भाग्य के भरोसे रहता है, वह असफल होकर दुःख भोगता है।
(ग) जो लोग मुसीबत में भी नहीं घबराते वे अपनी कर्मठता से अपने बुरे दिनों को भी अच्छे दिनों बदल लेते हैं।
(घ) इस कथन का तात्पर्य है जो लोग केवल कपोल कल्पनाएँ करते रहते हैं,, वे कभी सफल नहीं होते हैं।
(ड.) जो लोग मेहनती होते हैं वे अपने परिश्रम से कॉच को भी उज्ज्वल रत्न बना लेते हैं।

2

1. मनमोहनी प्रकृति की जो गोद में बसा है।
सुख स्वर्ग–सा जहाँ है, वह देश कौन–सा है।।
जिसके चरण निरंतर रत्नेश धो रहा है।
जिसका मुकुट हिमालय, वह देश कौन–सा है
2. नदियाँ जहाँ सुध की धरा बहा रही हैं।
सींचा हुआ सलोना, वह देश कौन–सा है।।
जिसके बड़े रसीले, फल कंद, नाज, मेवे।
सब अंग में सजे हैं, वह देश कौन–सा है।।
3. जिसके सुगंध वाले, सुंदर प्रसून प्यारे।
दिन–रात हँस रहे हैं, वह देश कौन–सा है।।
मैदान, गिरि, वनों में, हरियालियाँ महकतीं।
आनंदमय जहाँ है, वह देश कौन–सा है।।
4. जिसकी अनंत वन से धरती भरी पड़ी है।
संसार का शिरोमणि, वह देश कौन–सा है।।
सब से प्रथम जगत में जो सभ्य था यशस्वी।
जगदीश का दुलारा, वह देश कौन–सा है।।

क. मनमोहिनी प्रकृति की गोद में कौन–सा देश बसा हुआ है और वहाँ कौन–सा सुख प्राप्त होता है?
ख. भारत की नदियों की क्या विशेषता है?
ग. भारत के फूलों का स्वरूप कैसा है?
घ. जगदीश का दुलारा देश भारत संसार का शिरोमणि कैसे है?
ड़. काव्यांश का सार्थक एवं उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तर 2:–क. मनमोहिनी प्रकृति की गोद में भारत देश बसा हुआ है, यहाँ भारतवासियों को स्वर्ग के समान सुख की प्राप्ति होती है।

ख. भारत की नदियों की विशेषता है कि इनका जल अमृतमयी है। अर्थात् भाारत की नदियों में जल के रूप में सुधा की धारा बहती है।

ग. भारत के फूल बहुत ही प्यारे है, सुन्दर हैं तथा ये दिन–रात हँसते रहते हैं।

घ. जगदीश का दुलारा देश भारत सबसे पहले इस संसार में सभ्य होने के कारण तथा यशस्वी बनने कारण संसार का शिरोमणि देश है।

ड़. शीर्षक : मनमोहिनी प्रकृति/प्रकृति की गोद में बसा भारत देश/संसार का शिरोमणि देश

3

1. पुरुष हो पुरुषार्थ करो, उठो।
पुरुष क्या, पुरुषार्थ हुआ न जो,
हृदय की सब दुर्बलता तजो।
प्रबल जो तुम में पुरुषार्थ हो,
सुलभ कौन तुम्हें न पदार्थ हो?
प्रगति के पथ में विचरो उठो,
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो।
2. न पुरुषार्थ बिना कुछ स्वार्थ है,
न पुरुषार्थ बिना परमार्थ है।
समझ लो यह बात यथार्थ है –
कि पुरुषार्थ ही पुरुषार्थ है।
भुवन में सुख–शान्ति भरो, उठो।
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो।
3. न पुरुषार्थ बिना वह स्वर्ग है,
न पुरुषार्थ बिना अपवर्ग है।
न पुरुषार्थ बिना क्रियता कहीं,
न पुरुषार्थ बिना प्रियता कहीं।
सफलता वर–तुल्य वरो, उठो,
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो।
4. न जिसमें कुछ पौरुष हो यहाँ–
सपफलता वह पा सकता कहाँ?
अपुरुषार्थ भयंकर पाप है,
न उसमें यश है, न प्रताप है।
न कृमि–कीट समान मरो, उठो,
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो।।

क. प्रथम काव्यांश के माध्यम से कवि ने मनुष्य को क्या प्रेरणा दी है?
ख. मनुष्य पुरुषार्थ से क्या–क्या कर सकता है?
ग. 'सफलता वर–तुल्य वरो उठो' – पंक्ति का अर्थ स्पष्ट करिए।
घ. अपुरुषार्थ भयंकर पाप है – कैसे?
ड. काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

उत्तर 3. क. प्रथम काव्यांश के माध्यम से कवि ने मनुष्य को यह प्रेरणा दी है कि वह अपनी समस्त शक्तियाँ एकत्रित करके परिश्रम करे क्योंकि परिश्रम करने से ही जीवन में प्रगति संभव है।

ख. पुरुषार्थ से मनुष्य स्वार्थ तथा परमार्थ कर सकता है तथा विश्व में सुख–शान्ति की स्थापना कर सकता है।

ग. इस पंक्ति का अर्थ है कि मनुष्य कर्म करते हुए वरदान के समान सफलता को धारण करे, अर्थात् जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए परिश्रम अनिवार्य है।

घ. अपुरुषार्थ अर्थात् पुरुषार्थ न करना, उद्यम न करना। वास्तव में अपुरुषार्थ मनुष्य के लिए

एक पाप के समान है। क्योंकि अपुरुषार्थ में न तो यश है, न प्रताप है। अर्थात् उद्यमहीन मनुष्य को जीवन में यश और वीरत्व दोनों की ही प्राप्ति नहीं होती।

ड. शीर्षक – पुरुष हो पुरुषार्थ करो/पुरुषार्थ का महत्व।

4

मधु पीने वाले बहुतेरे, और सुधा के भक्त घनेरे,
गजभर की छाती वाला ही–विष को अपनाता है।
कोई विरला विष खाता है।।
पी लेना तो है ही दुष्कर, पा जाना उसका दुष्करतर,
बड़ा भाग्य होता है तब, विष जीवन में आता है।
कोई विरला विष खाता है।।
स्वर्ग सुधा का है अधिकारी,, कितनी उसकी कीमत भारी,,
किंतु कभी विष–मूल्य अमृत से ज्यादा पड़ जाता है।
कोई विरला विष खाता है।।

(क) इस कविता का उचित शीर्षक लिखिए।
(ख) मधु पीने वालों से कवि का क्या तात्पर्य है ?
(ग) जीवन में विष के आने को कवि ने बहुत भाग्य की बात क्यों माना है ?
(घ) विष का मूल्य अमृत से अधिक कब हो जाता है ?
(ड.) इस कविता में निहित संदेश स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–(क) कोई विरला विष खाता है।
(ख) इस कथन से कवि का आशय उन लोगों से है जो जीवन में सदा सुख–सुविधाओं का लाभ उठाना चाहते हैं।
(ग) जीवन में विष के आने से तात्पर्य जीवन में आने वाली कठिनाइयों से है। कवि ने इसे भाग्य की बात इसलिए कहा है क्योंकि कठिनाइयों का सामना करते हुए लक्ष्य को प्राप्त करना सौभाग्य की बात है।
(घ) विष का मूल्य अमृत से अधिक तब हो जाता है जब विष मनुष्य के लिए अमृत से भी अधिक उपयोगी हो जाता है।
(ड.) इस कविता के माध्यम से कवि यह संदेश देता है कि संसार में वह व्यक्ति सदा अपने लख्य को प्राप्त कर लेता है जो जीवन–संघर्षों का साहसपूर्वक सामना करते हुए आगे बढ़ता रहता है।

. अभ्यास के लिए काव्यांश

निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

युगों–युगों के इन झोंपड़ियों में रहकर भी
औरों के हित लगा हुआ हूँ महल सजाने।

ऐसे ही मेरे कितने साथी भूखे रह,
लगे हुए हैं औरों के हित अन्न उगाने।
इतना समय नहीं मुझको जीवन में मिलता,
अपनी खातिर सुख के कुछ सामान जुटा लूँ।
पर मेरे हित उनका भी कर्त्तव्य नहीं क्या ?
मेरी बॉहें जिनके भरती रहीं खजाने,
अपने घर के अंधकार की मुझे न चिंता
मैंने तो औरों के बुझते दीप जलाए।
मैं मजदूर मुझे देवों की बस्ती से क्या ?
अगणित बार धरा पर मैंने स्वर्ग बनाए।

(क) इस कविता का नाम लिखें।
(ख) इन पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।
(ग) मजदूर अपने लिए सुख का सामान क्यों नहीं जुटा पाता ?
(घ) 'औरों के लित अन्न उगाने' का आशय स्पष्ट कीजिए।
(ड.) समाज का मजदूरों के प्रति क्या कर्त्तव्य है ?

2. अपठित गद्यांश

1

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. आप एक ऐसे मुल्क में हैं, जहां करोड़ों युवा बसते हैं। इनमें से कई बेरोज़गार हैं, तो कई कोई छोटा–मोटा काम–धंधा कर रहे हैं। ये सब पैसा कमाने की ख्वाहिश रखते हैं, ताकि ये सभी अपनी रोज़मर्रा की जिंदगी को चला सकें और भविष्य को बेहतर बना सकें। ऐसे लोगों से आप यह उम्मीद कैसे रख सकती हैं कि वे समाज सेवा के कार्यों में रुचि लेंगे?

2. यह उन कई मुश्किल सवालों में से एक है, जिनका सामना शिक्षाविद सूसन स्ट्रॉड को भारत में करना पड़ा। उन्होंने अमेरिका में राष्ट्रीय युवा सेवा संगठन अमेरिका की स्थापना की है।

3. सूसन का मकसद युवाओं की उर्जा का इस्तेमाल एक रणनीति के तहत राष्ट्रीय विकास, लोकतंत्र को बढ़ावा देने और बेरोजगारी की समस्या से निपटने के लिए करना है। लेकिन क्या विकासशील देशों के युवा मुफ्त में वह काम करना चाहेंगे? क्या ये लोग अपनी पढ़ाई या कॅरियर को दरकिनार कर न्यूनतम वेतन पर ऐसी किसी मुहिम से जुड़ेंगे? प्रोत्साहन कहाँ है?

4. इसके जवाब में सुश्री स्ट्रॉड कहती हैं, "मैं सोचती हूँ कि ऐसे कुछ तरीके हैं, जिनसे भारत जैसे बेरोजगारी से जूझ रहे देशों में भी युवाओं की सेवाएँ ली जा सकती हैं।" वह पिछले साल नवंबर में दिल्ली में हुए स्वयंसेवी प्रयासों के अंतरराष्ट्रीय संगठन के सम्मेलन में मानद अतिथि थीं। वह कहती हैं, "युवाओं के लिए रोज़गार प्राप्ति में उनके पास नौकरी का कोई पूर्व अनुभव न होना एक सबसे बड़ी बाधा होता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए हमने कई साल पहले दक्षिण अफ्रीका में ऐसे बेरोज़गार युवाओं के लिए कुछ कार्यक्रम शुरू किए

जो राजनीतिक संघर्षों में सक्रिय रहे। ये युवा स्कूलों से बाहर हो चुके थे और रोज़गार के मौके भी गँवा चुके थे। हमने इनके लिए कुछ कार्यक्रम तैयार किए। मिसाल के तौर पर हमने उन्हें अश्वेतों के इलाकों में कम कीमत के मकान बनाने के काम से जोड़ा। वहाँ इन्होंने भवन निर्माण के गुर सीखे और जाना कि एक टीम के रूप में कैसे काम किया जाता है। इस तरह ये लोग एक हुनर में माहिर हुए और रोजगार पाने के दावेदार बने।''

5. नौकरियों से जुड़े बहुत से प्रशिक्षण कार्यक्रम अमूमन किसी खास कौशल के विकास पर केन्द्रित होते हैं, लेकिन सेवा संबंधी कार्यक्रम इनसे कुछ बढ़कर होते हैं। इनमें शामिल लोग, ज्यादा उपयोगी और पहल करने वाले नागरिक होते हैं। स्ट्रॉड के मुताबिक, इनकी यह खासियत इनमें समाज के प्रति एक जिम्मेदारी और प्रतिबद्धता का अहसास भरती है। युवाओं के लिए चलाए जाने वाले सेवा संबंधी कार्यक्रमों के जरिए उन्हें उपयोगी परियोजनाओं से जोड़ा जा सकता है और इसके एवज में कुछ पैसा भी दिया जा सकता है।

6. वह कहती हैं, ''जरा 1930 के दशक के मंदी के दौर के अपने देश को याद कीजिए। राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट ने संरक्षण कार्यक्रम चलाए। उन्होंने देश के युवाओं को, खासकर बेरोजगारों को कई तरह के कामों से जोड़ दिया। इसका इन युवाओं और पूरे देश को जबर्दस्त फायदा हुआ।'' स्ट्रॉड बताती हैं, ''इन युवाओं को उनके काम के बदले में पैसा दिया जाता था, जिसका एक हिस्सा उन्हें अपने परिवारों को देना होता था। अगर आप अमेरिका के किसी राष्ट्रीय उद्यान में जाएंगे तो आपको पता चलेगा कि इन लोगों ने कितनी समृद्ध विरासत का निर्माण किया था। इन युवाओं ने अमेरिका के ज्यादातर राष्ट्रीय उद्यानों का सृजन किया और वहाँ लाखों पेड़ लगाए।''

7. अमेरिका में ऐसे ही प्रयासों की सबसे ताजा मिसाल है 'अमेरिका', इसके जरिए हर साल हजार युवाओं को रोजगार दिया जाता है और इनमें से ज्यादातर बीस से तीस की आयुवर्ग के होते हैं। कई तो बस अभी हाईस्कूल से निकले ही होते हैं, तो कई स्कूल छोड़ चुके होते हैं और कई पी.एच.डी. भी होते हैं। सूसन बताती हैं कि आइडिया यह होता है कि ''लोग छात्रवृत्ति पाते हैं, जो न्यूनतम वेतन से कम होती है। इसके बदले ये युवा देश के सबसे विपन्न इलाकों में एक या दो साल तक कई तरह के काम करते हैं।''

8. स्ट्रॉड स्पष्ट करती हैं, ''इसमें दो राय नहीं कि इस पैसे से ये अमीर नहीं हो सकते, पर इतना जरूर है कि इससे इनका खर्चा आराम से चल जाता है। साल के आखिर में इन युवाओं को 4,725 डॉलर का एक वॉउचर दिया जाता है, जिसे ये सिर्फ शिक्षा या प्रशिक्षण की फीस चुकाने या कॉलेज का ऋण अदा करने के लिए ही इस्तेमाल कर सकते हैं।'' इन युवाओं में बहुत से मिसिसिपी और लुइसियाना में राहत का काम कर चुके हैं, जहां तूफान कैटरीना ने भारी तबाही मचाई थी।

9. स्ट्रॉड का मानना है कि स्वयंसेवी संगठन और व्यक्ति विशेष अपनी उर्जा और विचारों से विभिन्न योजनाओं को साकार कर सकते हैं, उन्हें कम करने और उसे फैलाने दीजिए। ''यदि आप बाकई ऐसा कुछ करना चाहते हैं, जिससे ज्यादा से ज्यादा युवाओं की जिंदगी प्रभावित हो तो इसके लिए आपको ज़्यादा से ज़्यादा जन संसाधनों की व्यवस्था करनी होगी।''

10. वह कहती हैं? ''भारत में भी युवाओं के लिए कई कार्यक्रम हैं। यहाँ एन. सी. सी. है और राष्ट्रीय सेवा योजना भी है, जिससे पूरे देश में पाँच हजार स्वयंसेवक जुड़े हुए हैं। लेकिन वह सवाल करती हैं कि इस योजना से सिर्फ पाँच हजार युवा ही क्यों जुड़े हुए हैं, दस लाख क्यों नहीं?क्या इसे समाज की जरूरतों और रोज़गार से जोड़ा गया? युवाओं को इससे जोड़ने की मुहिम क्यों नहीं छेड़ी जाती? इस देश में गाँधीवादी परम्पराएँ हैं, दान और

उदारता की भावना है, जिनके दम पर बड़े पैमाने पर सेवा संबंधी कार्यक्रम चलाए जा सकते हैं।''

क. गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
ख. भारत में करोड़ो युवाओं की कैसी स्थिति है?
ग. शिक्षाविद् सूसन स्ट्रॉड को भारत में क्या सामना करना पड़ा?
घ. सूसन युवाओं की उर्जा का इस्तेमाल कैसे करती है?
ड. अफ्रीका में बेरोजगार युवाओं के लिए किस तरह केफ कार्यक्रम तैयार किए गए?
च. युवाओं को उपयोगी परियोजनाओं के साथ कैसे जोड़ा जा सकता है?
छ. अमेरिका में युवाओं ने राष्ट्रीय उद्यानों का सृजन कैसे किया?
ज. 'अमेरिका' की भूमिका क्या है?
झ. ज्यादा युवाओं की जिंदगी को कैसे प्रभावित किया जा सकता है?
अ. 'छात्रवृत्ति' तथा 'विकासशील' शब्दों के वाक्य बनाइए।
ट. 'अमीर' और 'अतिथि' शब्दों के दो–दो पर्यायवाची लिखिए।
ठ. 'विपन्न' तथा 'न्यूनतम' शब्दों के विलोम लिखिए।
ड. 'बेरोज़गारी' शब्द में से उपसर्ग और प्रत्यय अलग–अलग कीजिए।

उत्तर 1. क. शीर्षक–बेरोजगारों के लिए रोजगार/रोजगार के लिए सूसन की भूमिका।

ख. भारत में करोड़ो युवाओं में से कई तो बेरोजगार हैं तो कई कोई छोटा–मोटा धंधा कर रहे हैं। ये सभी पैसा कमाने की इच्छा रखते हैं ताकि, भविष्य में जी सके।

ग. शिक्षाविद् सूसर स्ट्रॉड को भारत में कई मुश्किल सवालों का सामना करना पड़ा।

घ. सूसन युवाओं की उर्जा का इस्तेमाल एक रणनीति के तहत राष्ट्रीय विकास, लोकतंत्र को बढ़ावा देने और बेरोजगारी की समस्या से निपटने के लिए करती है।

ड़. अफ्रीका में बेरोजगार युवाओं को अश्वेतों के इलाके में कम कीमत के मकान बनाने के कार्यक्रम से जोड़ा गया। इससे इन्होंने भवन निर्माण के गुर सीखे तथा टीम के रूप में काम करना सीखा।

च. युवाओं को सेवा संबंधी कार्यक्रमों के माध्यम से उपयोगी परियोजनाओं से जोड़ा जा सकता है तथा इसके एवज में इन्हें कुछ पैसा भी दिया जा सकता है।

छ. अमेरिका में युवाओं ने ज्यादातर राष्ट्रीय उद्यानों का सृजन लाखों की संख्या में पेड़ लगा कर किया।

ज. 'अमेरिका' के जरिए हर साल 75 हजार युवाओं को रोजगार दिया जाता है। इन युवाओं की आयु बीस से तीस साल तक होती हैं।

झ. ज्यादा युवाओं की जिन्दगी को प्रभावित करने के लिए ज्यादा से ज्यादा जन संसाधनों की व्यवस्था करनी होगी।

अ. छात्रवृत्ति– कक्षा दसवीं से प्रथम आने पर मेरे छोटे भाई को दिल्ली सरकार ने छात्रवृत्ति दी।
विकासशील – विकासशील देश भी आगे बढ़ने की प्रतिस्पर्धा में लगे हुए हैं।

ट. पर्यायवाची ;दो–दो –
अमीर – धनी, धनाढ्य
अतिथि – मेहमान, आगन्तुक

ठ. विलोम शब्द –
विपन्न – सम्पन्न
न्यूनतम – अधिकतम

ड. बेरोजगारी
उपसर्ग – बे
प्रत्यय – ई

2

विद्यार्थी का अहंकार आवश्यकता से अधिक बढ़ता जा रहा है और दूसरा उसका ध्यान अधिकार पाने में है, अपना कर्त्तव्य पूरा करने में नहीं। अहं बुरी चीज कही जा सकती है। यह सब में होता है और एक सीमा तक आवश्यक भी हैं किंतु आज के विद्यार्थियों में यह इतना बढ़ गया है कि विनय के गुण उनमें नाम मात्र के नहीं रह गए हैं। गुरुजनों या बड़ों की बात का विरोध करना उनके जीवन का अंग बन गया है। इन्हीं बातों के कारण विद्यार्थी अपने अधिकारों के बहुत अधिकारी नहीं है। उसे भी वह अपना समझने लगे हैं। अधिकार और कर्त्तव्य दोनों एक–दूसरे से जुड़े रहते हैं। स्वस्थ स्थिति वही कही जा सकती है जब दोनों का संतुलन हो। आज का विद्यार्थी अधिकार के प्रति सजग है परंतु वह अपने कर्त्तव्यों की ओर से विमुख हो गया है। एक सीमा की अति का दूसरे पर भी असर पड़ता है।

(क) आधुनिक विद्यार्थियों में नम्रता की कमी क्यों होती जा रही है ?
(ख) विद्यार्थी प्रायः किस का विरोध करते हैं ?
(ग) विद्यार्थी में किसके प्रति सजगता अधिक है ?
(घ) उचित शीर्षक दीजिए।
(ड.) अधिकार और कर्त्तव्य में क्या संबंध है ?

उत्तर (क) आधुनिक विद्यार्थीयों में अहं के बहुत अधिक बढ़ जाने के कारण नम्रता की कमी होती जा रही है।
(ख) विद्यार्थी प्रायः अपने गुरुजनों या अपने से बड़ों की बातों का विरोध करते हैं।
(ग) विद्यार्थी में अपने अधिकारों और मॉगों के प्रति सजगता अधिक है।
(घ) विद्यार्थी और अहंकार।

(ङ.) अधिकार और कर्त्तव्य दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। इन दोनों में संतुलन रखना आवश्यक है।

3.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

भारत एक स्वतन्त्र धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। इस राष्ट्र में दक्षिण में स्थित कन्याकुमारी से लेकर उत्तर में काश्मीर तक विस्तृत–भू–भाग है। यह भू–भाग अनेक राज्यों के मध्य बंटा हुआ है। यहाँ अनेक धर्मानुयायी तथा भाषा–भाषी लोग रहते हैं। संपूर्ण राष्ट्र का एक ध्वज, एक लोकसभा, एक राष्ट्रचिन्ह तथा एक ही संविधान है। इन सभी से मिलकर राष्ट्र का रूप बनता है। देश जब अंग्रजों के अधीन था तब देश के प्रत्येक भाषा–भाषी तथा धर्म का अवलम्बन करने वाले ने देश को स्वतन्त्रा कराने का प्रयत्न किया था। उन्होंने महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलने वाले स्वाधीनता आन्दोलन में भी भाग लिया था। इसी के परिणामस्वरूप हमारा देश 15 अगस्त 1947 में स्वतन्त्रा हुआ। इस स्वतन्त्रा देश का संविधान बना और वह 26 जनवरी 1950 में लागू हुआ। इस संविधान के लागू होने के पश्चात् हमारा देश गणतंत्र कहलाया। 15 अगस्त को स्वाधीनता दिवस तथा 25 जनवरी को गणतंत्र दिवस हमें क्रमशः इसी दिन की याद दिलाते हैं। भारत की सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषता में एकता है। यहाँ पर विभिन्न धर्म, जाति तथा सम्प्रदाय के लोग रहते हैं। इन सभी लोगों की बोली और भाषा भी भिन्न है। भौगोलिक दृष्टि से देखें तो यहाँ पर कहीं उँचे–उँचे पहाड़ हैं तो कहीं समतल मैदान। कहीं उपजाउ भूमि है तो कहीं रेगिस्तान। दक्षिण में हिन्द महासागर लहलहा रहा है। प्राचीन काल में जब यातायात के साधन विकसित हुए थे तब यह विविधता स्पष्ट रूप से झलकती थी। आधुनिक काल में एक से एक द्रुतगामी यातायात के साधन बन चुके हैं जिससे देश की यह भौगोलिक सीमा सिकुड़ गई हैं। अब एक भाग से दूसरे भाग में हम शीघ्र ही पहुँच सकते हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से देखें तो सम्पूर्ण देश में एक अद्भुत समानता दिखाई पड़ती है। सारे देश में विभिन्न देवी–देवताओं के मंदिर है। इन सब में प्रायः एक–सी पूजा पद्धति चलती है। सभी धार्मिक लोगों में व्रत–त्योहारों को मानने की एक–सी प्रवृत्ति है। वेद, रामायण और महाभारत आदि ग्रंथों पर धार्मिक अनुष्ठान धर्म आया तो उसके भी अनुयायी सारे देश में विपुल साहित्य की रचना की गई। जब इस्लाम धर्म आया तो उसके भी अनुयायी सारे देश में फैल गये। इसी प्रकार ईसाई धर्मावलम्बी सम्पूर्ण देश में पाये जाते हैं। इससे सारा देश वस्तुतः एक ही सूत्र में बंधा हुआ है। भारतीय संस्कृति में ढले प्रत्येक व्यक्ति की अपनी पहचान है। इस पहचान के कारण इस देश को लोग एक दूसरे से अपना भिन्न अस्तित्व रखते हैं। विभिन्न प्रकार के रहन–सहन तथा पहनावे के होने पर भी सारा देश वस्तुतः एक ही है। यह सांस्कृतिक एकता ही वस्तुतः इस देश की वह शक्ति है जिससे इतना बड़ा देश एक सूत्र में बंधा हुआ है। विविधता में एकता की इस विशेषता पर सभी भारतीय गर्व करते हैं तथा इस पर संसार दंग है।

राष्ट्रीय एकता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए अनेक प्रयत्न किए गए हैं। अनेक महापुरुषों तथा नेताओं ने इस प्रकार के अवसरों पर जनता से आग्रह किया और जनता में एक प्रकार की जागृति भी आई किन्तु स्थायी न रह सकी। महात्मा गांधी का जीवन राष्ट्रीय एकता से ओत–प्रोत था। उनका समूचा जीवन राष्ट्रीय एकता का ज्वलन्त उदाहरण था। महात्मा गांधी तो कभी–कभी एक मास का उपवास भी करते थे। ''हिन्दू–मुस्लिम भाई–भाई'' के नारे लगाए जाते थे। अन्त में महात्मा जी के बलिदान का एकमात्र आधार 'राष्ट्रीय एकता' ही था। इस

दिशा में श्री नेहरू के प्रयत्नों को भी भुलाया नहीं जा सकता। यह बात दूसरी है कि स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। शनैः शनैः भावात्मक एकता का विकास हुआ। इस समय पृथकतावादी विचारधारा पनप रही है। हमें ऐसी विचारधारा को समाप्त करना चाहिए। समस्त राज्य संघ गणराज्य भारत के अभिन्न अंग है। समस्त महामानवों, नेताओं, राजनीति के पंडितों तथा महान साहित्यकारों को जनता में भारतीयता कूट–कूट कर भरनी चाहिए। यह प्रयत्न निस्सन्देह राष्ट्रीय एकता में सहायक होगा। प्रत्येक भारतीय को संकीर्ण विचारधारा का परित्याग कर व्यापक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। तभी हमारी राष्ट्रीय एकता अक्षुण्ण बनी रह सकती है, जो आज की एक महत्वपूर्ण अपेक्षा है।

क. राष्ट्र का निर्माण कौन–सी चीजें मिल कर करती हैं?
ख. किसके परिणामस्वरूप देश 15 अगस्त 1947 में स्वतंत्र हुआ था?
ग. भारत की उल्लेखनीय विशेषता क्या है?
घ. देश की भौगोलिक सीमा किस प्रकार सिकुड़ गई प्रतीत होती है?
घ. सांस्कृतिक दृष्टि से देश में क्या समानता दिखाई पड़ती है?
च. भारत में अनेकता में एकता कैसे है?
छ. महात्मा गांधी का जीवन कैसा था?
ज. कौन–सा प्रयत्न राष्ट्रीय एकता में सहायक होगा?
झ. हमारी राष्ट्रीय एकता कैसे अक्षुण्ण बनी रह सकती है?
अ. गद्यांश में से 'ता' प्रत्यय से दो शब्द बनाइए।
त. 'सांस्कृतिक' शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए।
थ. विलोम शब्द लिखिए – 'आधुनिक', 'अपेक्षा'।
द. गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तर 3:– क. भारत एक स्वतंत्र धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। यहाँ अनेक धर्मानुयायी तथा भाषा–भाषी लोग रहते हैं। एक ध्वज, एक लोकसभा, एक राष्ट्रचिन्ह तथा एक संविधान मिलकर राष्ट्र का निर्माण करते हैं।

ख. हमारा देश जब अंग्रेजों के आधीन था। तब प्रत्येक भाषा–भाषी तथा धर्म का अवलम्बन करने वाले न देश को स्वतंत्र करने का प्रयत्न किया था। उन्होंने महात्मा गाँधी के नेतृत्व में चलने वाले स्वाधीनता आंदोलन में भाग लिया था। इसी परिणामस्वरूप हमारा देश 15 अगस्त 1947 में स्वतंत्रा हुआ था।

ग. भारत की सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषता अनेकता में एकता है। भारत में विभिन्न धर्म, जाति तथा समुदाय के लोग रहते हैं। इन सभी लोगों की बोली तथा भाषा भी भिन्न है। यहाँ पर कहीं उपजाउ भूमि है तो कहीं रेगिस्तान, कहीं उँचे–2 पहाड़ हैं तो कहीं समतल मैदान।

घ. आधुनिक काल में द्रुतगामी यातायात बन गए हैं जिसके कारण हम एक भाग से दूसरे भाग में शीघ्र ही पहुँच सकते हैं। इसी कारण देश की भौगोलिक सीमा सिकुड़ गई प्रतीत होती है।

ड़. सांस्कृतिक दृष्टि से सम्पूर्ण देश में एक अद्भुत समानता दिखाई पड़ती है। सारे देश में विभिन्न देवी–देवताओं के मंदिर हैं। इन सब में प्रायः एक–सी पूजा पद्धति चलती है। लोग

व्रत–त्यौहारों को मानते हैं। वेद, रामायण, गीत, आदि ग्रंथों के अनुष्ठान होते हैं। इस्लाम तथा ईसाइ धर्म में भी ऐसी समानताएँ दिखाई पड़ती हैं। इसी कारण सारा देश एक सूत्र में बँधा हुआ है।

च. भारतीय संस्कृति में ढले प्रत्येक व्यक्ति की अपनी पहचान है। इस पहचान के कारण इस देश के लोग एक दूसरे से अपना अलग अस्तित्व रखते हैं। विभिन्न प्रकार का रहन–सहन तथा पहनावा, यह सांस्कृतिक एकता इस देश की वह शक्ति है जिससे इतना बड़ा देश एक सूत्र में बँधा हुआ है। यही अनेकता में एकता है। सभी भारतीय इस पर गर्व करते हैं।

छ. महात्मा गाँधी का समूचा जीवन राष्ट्रीय एकता से ओत–प्रोत एक ज्वलन्त उदाहरण था। उनके बलिदान एक एकमात्र आधार राष्ट्रीय एकता ही था।

ज. समस्त महामानवों, नेताओं, राजनीति के पंडितों तथा महान् साहित्यकारों को जनता में भारतीयता कूट–कूटकर भरनी चाहिए। यही प्रयत्न राष्ट्रीय एकता में सहायक होगा।

झ. यदि प्रत्येक भारतीय संकीर्ण विचारधारा का परित्याग कर व्यापक दृष्टिकोण अपना ले तभी हमारी राष्ट्रीय एकता अक्षुण्ण बनी रह सकती है। यह आज की एक महत्वपूर्ण अपेक्षा है।

अ. 'ता्' – स्वाधीनता, विविधता

त. सांस्कृतिक – वास्तव में सांस्कृतिक एकता ने ही भारत को एक सूत्र में बाँध हुआ है।

थ. आधुनिक – पुरातन
अपेक्षा – उपेक्षा

द. 'राष्ट्रीय एकता'

4.

आपका जीवन एक संग्राम स्थल है जिसमें आपको विजयी बनना है। महान् जीवन के रथ के पहिए फूलों से भरे नंदन वन से नहीं गुजरते, कंटकों से भरे बीहड़ पथ पर चलते हैं। आपको ऐसे ही महान् जीवन–पथ का सारथि बन कर अपनी यात्रा को पूरा करना है। जब तक आपके पास आत्म–विश्वास का दुर्जय शस्त्र नहीं है, न तो आप जीवन की ललकार का सामना कर सकते हैं, न जीवन संग्राम में विजय प्राप्त कर सकते हैं और न महान् जीवन के सोपानों पर चढ़ सकते हैं। जीवन–पथ पर आप आगे बढ रहे हैं, दुःख और निराशा की काली घटाएं आपके मार्ग पर छा रही हैं, आपत्तियों का अंधकार मुंह फैलाए आपकी प्रगति को निगलने के लिए बढ़ा चला आ रहा है, लेकिन आपके हृदय में आत्म–विश्वास की दृढ़ ज्योति जगमगा रही है तो इस दुःख एवं निराशा का कुहरा उसी प्रकार कट जाएगा जिस प्रकार सूर्य की किरणों के फूटते ही अंधकार भाग जाता है।

(क) महान् जीवन के रथ किस रास्ते से गुजरते हैं ?
(ख) आप किस शस्त्र के द्वारा जीवन के कष्टों का सामना कर सकते हैं ?
(ग) निराशा की काली घटाएं किस प्रकार समाप्त हो जाती हैं ?
(घ) उचित शीर्षक दीजिए।
(ड.) जीवन क्या है ?

उत्तर–(क) जीवन रूपी संग्राम स्थल से है जो रथ गुजरते हैं वे सरल–सीधे मार्ग से नहीं गुजरते। वे तो कांटों से भरे बीहड़ रास्ते से गुजरते हैं।
(ख) जीवन के कष्टों का साामना हम आत्मविश्वास के शस्त्र से कर सकते हैं।
(ग) निराशा की काली घटाएं दृढ़ आत्मविश्वास और आत्मिक शक्ति में समाप्त हो जाती हैं।
(घ) आत्म विश्वास।
(ड.) जीवन एक संग्राम स्थल है।

अभ्यास के लिए गद्यांश

1. आज समस्त विश्व पर अणुयुद्ध के बादल मंडरा रहे हैं। पश्चिमी जगत् के शस्त्र निर्माता देश कहीं न कहीं संघर्ष और अशांति बनाए रखना चाहते हैं, जिससे उनका शस्त्र व्यापार चलता रहे। हमारे पास अमेरिका जैसे भयंकर शस्त्रास्त्र तो है नहीं, किंतु प्रेम, सद्भावना और मानवता जैसी दिव्य शक्तियां हमारे पास मौजूद हैं। इन्हीं के बल पर हम संसार को शांति और सह–अस्तित्व का मार्ग दिखा सकते है। हमें युद्ध के विरुद्ध विश्व जनमत तैयार करना होगा जिससे जनता की खून–पसीने की कमाई अस्त्र–शस्त्रों की खरीद और निर्माण पर खर्च न होकर विकास कार्यों की दिशा में लगाई जा सके। इसी में मनुष्य का कल्याण है।

(क) इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक बताइए।
(ख) इस गद्यांश का एक–तिहाई शब्दों में सार लिखिए।
(ग) शस्त्र निर्माता देश संधर्ष और अशांति क्यों बनाए रखना चाहते हैं ?
(घ) हमारे पास कौन–सी दिव्य शक्तियां हैं ?
(ड.) आज समस्त संसार की क्या दशा है ?

खंड–ख

3. निबंध–लेखन

1. भारत हमारा सबसे न्यारा

क. भूमिका
ख. प्राचीन भारत की झांकी
ग. विविधताओं का देश
घ. अनेकता में एक्य भाव
ड. संस्कृति व भारतीयता

च. स्वदेश प्रेम की प्रवृत्ति
छ. हमारे कर्त्तव्य
ज. उपसंहार

2. <u>प्रदूषण की समस्या</u>

क. भूमिका
ख. प्रदूषण व पर्यावरण
ग. प्रदूषणः औद्योगिक विकास की देन
घ. पर्यावरण असंतुलन के घातक परिणाम
ड. आज के युग की समस्याः प्रदूषण
च. उपसंहार

3. विद्यार्थी और अनुशासन

क. विद्यार्थी और अनुशासन का अर्थ
ख. अनुशासन के प्रकार
ग. अनुशासन से लाभ
घ. अनुशासनहीनता के कारण
ड. समाधान

4. श्रम का महत्व

क. परिश्रम और भाग्य
ख. परिश्रम और सफलता
ग. परिश्रम और विकास
घ. शारीरिक और मानसिक परिश्रम
ड. परिश्रम के लाभ
च. उपसंहार

<u>अभ्यास प्रश्नः–</u>

क. भारतीय सभ्यता पर हावी होती पश्चिमी सभ्यता।
ख. नर हो न निराश करो मन को।
ग. युवा पीढ़ी और देश का भविष्य।
घ. मीडिया की सामाजिक ज़िम्मेदारी।
ड़. अनेकता में एकता–भारत की विशेषता।
च. मनोरंजन के आधुनिक साधन।
छ. विज्ञापन कला वेफ लाभ।
ज. हमारे त्योहार–हमारा गौरव

4. पत्र–लेखन

आधुनिक जीवन में पत्र–लेखन एक महत्त्वपूर्ण कला है। अपनी भावनाओं को दूर रहने वाले व्यक्तियों तक पहुॅचाने का तथा उनकी भावनाओं को प्राप्त करने का एक सहज साधन है। पत्र–लेखन एक कला है इसलिए पत्र लिखते समय पत्र में सहज, सरल तथा सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना चाहिए, जिसे पत्र को प्राप्त करने वाला पत्र में व्यक्त भावों को अच्छी प्रकार से समझ सके। पत्र में विचारों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत कीजिए। मुख्य रूप से पत्र दो प्रकार के होते है–

1. औपचारिक–पत्र–जो पत्र उन लोगों को लिखे जाते हैं, जिनसे हमारा व्यक्तिगत संबंध नहीं होता तथा व्यापार अथवा कार्यालय के कार्यों से लिखे जाते हैं वे औपचारिक–पत्र होते हैं। व्यवसाय से संबंधी, प्रधानाचार्य को लिखे प्रार्थना–पत्र, सरकारी विभागों को लिखे गए पत्र, संपादक के नाम पत्र आदि औपचारिक पत्र कहलाते हैं। इनमें व्यक्तिगत बातों का उल्लेख नहीं रहता है, केवल कार्य विशेष से संबंधित विवरण रहता है। औपचारिक पत्रों का प्रारूप निम्नलिखित होता है

2. अनौपचारिक पत्र–जो पत्र हम अपने संबंधियों, मित्रों, परिचितों आदि को लिखते हैं वे अनौपचारिक अथवा व्यक्तिगत–पत्र कहलाते हैं। इन पत्रों में व्यक्तिगत भावनाओं को पूरा सम्मान दिया जाता है। ये पत्र व्यक्तिगत समस्याओं, बधाई, शोक, आमंत्रण आदि के हो सकते हैं।

श्रेष्ठ पत्र की विशेषताएॅं–

1. पत्र निष्कपट भाव से बातचीत की शैली में लिख जाना चाहिए।
2. पत्र आडंबर रहित एवं बनावटीपन से दूर होना चाहिए।
3. पत्र में शिष्टाचार का सावधानी से प्रयोग होना चाहिए।
4. पत्र की भाषा सरल, शिष्ट एवं स्वाभाविक होनी चाहिए।
5. पत्र में अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए।
6. पत्र में पता, तिथि, सम्बोधन, अभिवादन एवं समापनादि सुस्पष्ट होना चाहिए।
7. अनावश्यक विद्वत्ता प्रदर्शन से बचना चाहिए।

1. अपने क्षेत्र में बिजली संकट से उत्पन्न कठिनाइयों का वर्णन करते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार–पत्र के संपादक को पत्र लिखें।

मुरली मनोहर साठे
1904–दादाभाई नौरोजी मार्ग,
मुंबई–400001
दिनांकः 26 जून,20.....
सेवा में
संपादक,
महाराष्ट्र समाचार,

मुंबई–400001

प्रिय महोदय,

आपके लोकप्रिय समाचार–पत्र के माध्यम से मैं अपने निम्नलिखित विचार महाराष्ट्र विद्युत निगम के अधिकारियों तक पहुॅंचाना चाहता हूॅं। आशा है कि आप इन्हें अपने दैनिक–पत्र में उचित स्थान देकर कृतार्थ करेंगे।

मुबई के दादा भाई नौरोजी मार्ग निवासियों को आजकल गंभीर विद्युत आपूर्ति के संकट का सामना करना पड़ रहा है। आजकल के इन भीषण गर्मी के दिनों में भरी दोपहरी में बिजली चली जाती है तथा आधी–आधी रात तक नहीं आती। इससे सभी वर्गों के नागरिकों को अनेक असुविधाओं का सामना करना पड़ता। छोटे–छोटे बच्चे तथा वृद्ध गर्मी से व्याकुल हो उठते हैं तथा परीक्षा के लिए पढ़ने वाले युवक–युवतियॉं पढ़ नहीं पाते।

इस विद्युत संकट का मुख्य कारण इस क्षेत्र में निम्न स्तर के ट्रांसफार्मरों का प्रयोग है, जो निरंतर खराब ही रहते हैं। गत वर्ष भी इस क्षेत्र के नागरिकों को ग्रीष्म ऋतु में इसी प्रकार विद्युत संकट का सामना करना पड़ा था।

विद्युत निगम के अधिकारियों से प्रार्थना है कि इस क्षेत्र में भारतीय मानक संस्था से प्रमाणित तथा समुचित क्षमता वाले ट्रांसफार्मर लगाए जाएं जिससे क्षेत्र के निवासियों को निर्बाध रूप से विद्युत आपूर्ति होती रहे।

धन्यवाद,

भवदीय,

ह0 मुरली मनोहर साठे

2. पुलिस अधीक्षक को अपने क्षेत्र में बढ़ती हुई चोरी की घटनाओं को रोकने के लिए उचित प्रबंध करने के लिए पत्र लिखें।

डॉक्टर विनोद कुमार सिंगल
48–राज नगर,
गुहावटी
दिनांक : 14 मार्च, 20.........

सेवा में
पुलिस अधीक्षक,

गुहावटी।

प्रिय महोदय,

निवेदन यह है कि राज नगर गुहावटी नगर का एक आवासीय क्षेत्र है जिसमें अधिकांश रूप से मध्यम तथा उच्च–मध्यम वर्ग के नौकरी पेशा तथा व्यवसायी लोग रहते हैं। हमारा यह क्षेत्र नगर के मध्य भाग में स्थित होने के कारण अत्यंत सुरक्षित माना जाता था किंतु विगत कुछ दिनों से इस क्षेत्र में चोरी और डकैती की घटनायें बढ़ती जा रही हैं। आये दिन किसी दिन किसी–न–किसी घर में चोरी हो जाती है, जिसकी सूचनाएँ राज नगर पुलिस चौकी को दे दी जाती हैं, परंतु अभी भी चोरियाँ हो रही है।

आप से अनुरोध है कि आप इस संबंध में समुचित कार्यवाही करने के लिए आदेश दें तथा इस क्षेत्र में रात्रि तथा दोपहर के समय पुलिस की गश्त में वृद्धि करें।

धन्यवाद,

भवदीय,

विनोद कुमार सिंगल

<u>अनौपचारिक–पत्र</u>

1. बड़ी बहन की ओर से अपने छोटे भाई को खर्चीले फैशन की होड़ छोड़कर परिश्रम करने
प्रेरणा दीजिए।

425–बी, मॉडल ग्राम,
बैंगलोर।
दिनांक : 27 अप्रैल, 20.....

प्रिय राकेश,

चिरंजीव रहा।

कल ही माता जी का पत्र प्राप्त हुआ है। उन्होंने लिखा है कि स्कूल में प्रवेश लेते ही राकेश के रंग–ढंग बदल गए हैं। उसमें फैशन की प्रवृत्ति जाग उठी है। प्रिय अनुज, फैशन आडंबर एवं दिखावे के लिए किया जाता है। इसमें धन का अपव्यय होता है, समय नष्ट होता है तथा अनेक प्रकार की चारित्रिक दुर्बलताएँ जन्म लेती हैं। सादा जीवन उच्च विचार ही मानव के सबसे बड़े आभूषण हैं। सच्चाई और ईमानदारी जैसी भावनाएँ सादगी में ही रहती हैं। परिश्रम ही सफलता की कुंजी है। परिश्रम के बल पर ही तुमने दशम् कक्षा में शानदार सफलता प्राप्त की है। फैशन से

दूर रहकर तथा परिश्रम के बल पर ही तुम अपने उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकते हो। परिश्रम की महिमा को कौन नहीं जानता ?

शिक्षा–काल में तो फैशन विष के सामान है। मुझे विश्वास है कि तुम फैशन की प्रवृत्ति से दूर रहोगे और परिश्रम के महत्त्व को समझते हुए अध्ययन में लीन रहोगे। शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास ही विद्यार्थी का लक्ष्य है।

तुम्हारी बड़ी बहन,
सुनीता।

2. आपका मित्र बोर्ड की परीक्षा में प्रथम रहा है। उसे बधाई संबंधी एक पत्र लिखिए।

31, मालाबार,
मुंबई।
7 अगस्त, ...

प्रिय मित्र गिरीश,

सस्नेह नमस्कार।

आज के 'दैनिक भास्कर' में तुम्हारा चित्र देखकर तथा यह जानकर कि तुम बोर्ड की परीक्षा में प्रांत भर में प्रथम रहे हो, हृदय प्रसन्नता से झूम उठा। मित्रवर, तुम से यही आशा थी। तुमने अपने माता–पिता तथा अध्यापक वर्ग के सपनों को साकार कर दिया है। मित्र वर्ग की प्रसन्नता का तो पारावार ही नहीं। इस शानदार सफलता पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। यह तुम्हारे कठोर परिश्रम का सुपरिणाम है। आज तुमने अनुभव किया होगा कि परिश्रम और प्रयत्न की कितनी महिमा है।

आज तुम्हारे ऊपर सभी गर्व अनुभव कर रहे हैं। तुम्हारे माता–पिता कितने प्रसन्न होंगे, इसका अनुमान लगाना सहज नहीं। तुम्हारी इस असामान्य सफलता ने पाठशाला को ही चार चॉद लगा दिए हैं।

आशा है कि आगामी परीक्षा में भी तुम इसी तरह अपूर्व सफलता प्राप्त करते रहोगे। संभव है अगले सप्ताह तुम्हारे पास आऊं। मिठाई तैयार रखना। अगर ठहर सका तो चल चित्र भी अवश्य देखूंगा।

इस शानदार सफलता पर एक बार फिर मेरी तरफ से हार्दिक बधाई स्वीकार करें। अपने माता–पिता को मेरी ओर से हार्दिक बधाई देने के साथ मेरी ओर से सादर नमस्कार भी कहें।

तुम्हारा अभिन्न हृदय,
राजीव बंसल।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. अपने क्षेत्र में पेयजल की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए स्वास्थ्य अधिकारी को एक पत्र लिखिए।

2. परिवहन निगम के अध्यक्ष को एक पत्र लिखिए जिसमें आपके गांव/कॉलोनी तक बस चलाने का अनुरोध हो।

3. विदेश में स्थित अपने पत्र–मित्र को होली पर्व की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए पत्र लिखिए।

4. अपनी योग्यताओं का विवरण देते हुए अपने जिले के शिक्षा अधिकारी को शिक्षक के पद के लिए आवेदन–पत्र लिखिए।

5. दूरदर्शन के महानिदेशक को दूरदर्शन के कार्यक्रमों की समीक्षा करते हुए एक पत्र लिखिए।

6. अपने मुहल्ले के समीप स्थित ''बुद्ध पार्क'' की दुर्दशा की ओर निगमायुक्त का ध्यान आकर्षित करते हुए गौतम की ओर से पत्र लिखिए, जिसमें पार्क के समुचित रख–रखाव की व्यवस्था का आग्रह किया हो।

5. अभिव्यक्ति और माध्यम –लघुउत्तरीय प्रश्न–

क. पेज थ्री पत्रकारिता का तात्पर्य क्या है?
ख. स्तम्भ लेखन से क्या तात्पर्य है?
ग. 'डेड लाइन' क्या है?
घ. पत्रकारीय लेखन और साहित्यिक सृजनात्मक लेखन में क्या अन्तर है?
ड. फीचर लेखन की भाषा शैली कैसी होनी चाहिए?
च. उल्टा पिरामिड शैली क्या होती है?
छ. पत्रकारिता की भाषा में 'बीट' किसे कहते हैं?
ज. पत्रकारिता का मूल तत्व क्या है?
अ. फीचर लेखन और समाचार में क्या अन्तर है?
ट. छह ककार कौन से हैं?
ठ. मुद्रण माध्यम के अंतर्गत कौन–कौन से माध्यम आते हैं ?

ड. फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज का क्या आशय है ?
ढ. ड्राई एंकर क्या है ?
ण. इंटरनेट पत्रकारिता क्या है ?

त. वेबसाइट पर विशुद्ध इंटरनेट प्रत्रकारिता आरंभ करने का श्रेय भारत में किसे दिया जाता है ?
थ. उलटा पिरामिड में समाचर का ढांचा कैसा होता है ?
द. उलटा पिरामिड शैली का प्रयोग कब से शुरू हुआ था ?
ध. समाचार–पत्रों में छपने वाले फीचरों की शब्द संख्या कितनी होती है ?
न. एक अच्छे और रोचक फीचर के साथ क्या होना आवश्यक है ?

उत्तरः–

क. पेज थ्री पत्रकारिता का तात्पर्य ऐसी पत्रकारिता से हैं जिसमें फैशन, अमीरों की बड़ी–बड़ी पार्टियों, महफिलों तथा लोकप्रिय लोगों के निजी जीवन के बारे में बताया जाता है। यह सामान्य तथा समाचार पत्र के पृष्ठ तीन पर प्रकाशित होती है।

ख. महत्वपूर्ण, लोकप्रिय लेखकों के लेखों की नियमित श्रृंखला को स्तंभ लेखन कहा जाता है। इसमें लेखक के विचार अभिव्यक्त होते हैं।

ग. समाचार माध्यमों में किसी समाचार को प्रकाशित या प्रसारित होने के लिए पहुँचने की आखिरी समय–सीमा को डेड लाइन कहा जाता है।
घ. पत्रकारीय लेखन में पत्रकार पाठकों, दर्शकों व श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं, जबकि साहित्यिक–सृजनात्मक लेखन में चिंतन के जरिए नई रचना का उद्भव होता है।

ड. फीचर लेखन की भाषा सरल, रूपात्मक, आकर्षक व मन को छूने वाली होनी चाहिए।

च. उल्टा पिरामिड–शैली में पहले इंट्रो, मध्य में बोडी तथा अंत में समाचार होता है।

छ. पत्रकारिता की भाषा में 'बीट' का अर्थ है – लेखन व रिपोर्टिंग का विशेष क्षेत्र।

झ. लोगों की जिज्ञासा की भावना ही पत्रकारिता का मूल तत्व है। अर्थात् जिज्ञासा का पता–पल बलवती होना ही मूल तत्व है।

अ. फीचर एक सृजनात्मक, सुव्यवस्थित तथा आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को जानकारी देने के साथ मनोरंजन व शिक्षित कराना होता है। जबकि समाचार में पाठकों को तात्कालिक घटनाक्रम से अवगत कराया जाता है।

ट. छह प्रकार हैं – क्या, कौन, कहाँ, कब, क्यों और कैसे।

ठ. मुद्रण माध्यम के अन्तर्गत समाचार–पत्र, पत्रिकाएं, पुस्तकें आदि हैं।

ड. जब कोई विशेष समाचार सबसे पहले दर्शकों तक पहुँचाया जाता है तो उसे फ्लैश अथवा ब्रेकिंग न्यूज कहते हैं।

ढ. ड्राई एंकर वह होता है जो समाचार के दृश्य नजर नहीं आने तक दर्शकों को रिपोर्टर से मिली जानकारी के आधार पर समाचार से संबंधित सूचना देता है।

ण. इंटरनेट पर समाचार–पत्रों को प्रकाशित करना तथा समाचारों का आदान–प्रदान करना इंटरनेट पत्रकारिता कहलाता हैं।

त. भारत में इंटरनेट पर विशुद्ध पत्रकारिता आरंभ करने का श्रेय 'तहलका डॉट का' को दिया जाता है।

थ. पहले इंट्रो या मुखड़ा फिर बाडी और अंत में समापन।

द. उलटा पिरामिड शैली का प्रयोग उन्नीसवीं सदी के मध्य से शुरू हुआ था।

ध. समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में छपने वाले फीचरों की शब्द संख्या 250 शब्दों से लेकर 2000 शब्दों तक होती है।

न. एक अच्छे और रोचक फीचर के साथ फोटो, रेखांकन, ग्राफिक्स आदि का होना आवश्यक है।

6. फीचर आलेख, रिपोर्ट, संपादकीय, आलेख, इत्यादि

जीवन–संदर्भो से जुड़ी घटनाओं और स्थितियों पर

.फीचर की विशेषताएं

- '.फीचर' एक प्रकार का गद्यगीत है जो नीरस और गंभीर नहीं हो सकता।
- '.फीचर' ऐसा होना चाहिए जिसे पढ़कर पाठक का हृदय प्रसन्न हो या पढ़कर दिल में दुःख का दरिया बहे।
- .फीचर का महत्तव इस बात में है कि वह किसी बात को थोड़े से शब्दों में रोचकता और असर से कहे। लेख हमें शिक्षा देता हैं।
- .फीचर हमारा मनोरंजन करता हैं .फीचर में हमें अपनी मनोवृत्ति और अपनी समझ के अनुसार किसी विषय का या व्यक्ति का चि्त्रण करना पड़ता हैं
- इस में हास्य और कल्पना का विशेष हाथ रहता है।
- '.फीचर' ऐतिहासिक और पौराणिक भी हो सकते हैं। हर वर्ष होली, दीवाली, दशहरा, मेलों, राखी आदि के अवसर पर पुरानी बातों को दुहरा कर .फीचर लिखे जाते हैं।

- इनमें विचारों की एक बंधी हुई परंपरा का निर्व्रह किया जाता है।
- .फीचर तो धोबी, माली, खानसामा, घरेलू नौकर, चौकीदार, रिक्शावाला, रहड़ी वाला, चपड़ासी आदि पर भी लिखे जा सकते हैं।
- '.फीचर' चाहे कैसे हों, उन्हें लिखने के लिए दिल और दिमाग दोनों का इस्तेमाल होना चाहिए।
- अच्छा आरंभ और खूबसूरत अंत करने पर .फीचर की सफलता निर्भर करती है।

.फीचर के मुछ उदाहरण

1. गुम होती चहचहाहट

एक समय था जब सुबह–सवेरे नींद चिड़ियों की चहचहाहट से खुलती थी। घर के बाहर लगे शिरीष के घने पेड़ पर तथा दीवार के छेदों में चिड़िया के अनेक घोंसले थे। तरह–तरह के पक्षी रहते थे वहॉ। सुबह–सुबह उन की चहचहाहट से वातावरण संगीतमयी हो जाता था। बीच–बीच में कौवों की कांव–कांव भी सुनाई दे जाती थी पर अब तो बाहर आंगन में या छत पर भी जा कर कहीं नहीं दिखाई देते वे पक्षी जिन की मधुर कलरव को सुनते–सुनते हम बड़े हुए। मानव सभ्यता जिन पक्षियों के साथ वढ़ रही थी उसे आज पश्चिमी सम्यता ने हमसे दूर कर दिया। चौड़ी होती सड़कें दोनों ओर किनारे लगे पेड़ों को निगल गई। वह प्यारी–सी भूरी सफेद काली चिड़िया, जिसे हम गौरेया कहा करते थे, जब अपने झुंड में एक साथ चीं–चीं किया करती थीं तो हम उसे रोटी के टुकड़े फेंक–फेंक कर अपने नाश्ते में सहभागी बनाया करते थे और वे भी बेखटके उछल–उछल कर हमारे पास तक आ जाती थी। पता नहीं अब कहां खो गई–दिन भर फुर्र–फुर्र इधर से उधर मुंडेरों पर उड़ने वाली चिड़िया।

वैज्ञानिकों का मानाना है कि जब से मोबाइल का चहुॅ दिशा बोलबाला हुआ है तब से हमारी प्यारी गौरेया की चहचहाहट घुट कर रह गई है। मोबाइल फोन सिगनल की तरंगें वाययुमंडल में यहॉ–वहॉ फैली रहती हैं जिस कारण ये नन्हें–नन्हें पक्षी स्वयं को उस वातावरण में ढाल नहीं पाते। इनकी प्रजनन क्षमता कम हो जाती है जिस के परिणामस्वरूप ये धीरे–धीरे सदा के लिए हमारी ऑखों से ओझल होती जा रही हैं।

मुझे आज भी याद है अपने बचपन के वे दिन जब हम अपने आंगन के एक कोने में मिट्टी के कटोरे में पानी भर कर रख दिया करते थे। ढेरों चहचहाती चिड़िया चोंच में पानी भर–भर कर पीया करती थीं। कोई–कोई तो पानी में घुस कर पंखों को फड़फड़ा कर डुबकियॉ भी खाती थी। हमें तो यह देख तब आलौकिक आनंद आ जाया करता था। कभी–कभी वे मिट्टी में उलटी–सीधी होकर, पंखों से मिट्टी उड़ा–उड़ा कर धूल स्नान किया करती थीं। बारिश के दिनों में वे आंगन में कपड़े सुखाने के लिए बंधी प्लास्टिक की रस्सी पर दीवाली के दीयों की तरह सज कर

बैठ जाया करती थीं। कभी–कभी उनके साथ छोटे–छोटे बच्चे भी आया करते थे जिन्हें ये उड़ना सिखाया करती थीं। रात को हमारी मॉ हमें सोने से पहले रोज वहीं कहानी सुनाया करती थी–'एक थी चिड़िया और एक था चिरैया, जिन में गहरा आपसी प्यार था जो आपस में कभी नहीं लड़ते थे।'

अब तो वह मनोरंजक दृश्य आंखों के ओझल हो गया है। उन की यादें ही रह गई हैं। नई पीढ़ी तो कभी–कभार चिड़िया–घर में उन्हें देख अपने साथ आए बड़ों से पूछा करेंगे–'वह क्या है ?' यह आज बनावटी जीवन पता नहीं हमें अभी प्रकृति से कितना दूर ले जाएगा ? शायद आने वाली पीढ़ी इस चहचहाहट को केवल मोबाइल की रिंग–टोन पर ही सुन पाएगी या फिल्मों में ही चिड़िया को चीं–चीं करते देख पाएगी।

मेरे स्कूल का माली

श्रीपाल है मेरे स्कूल का माली। लगभग 40–50 का दुबला–पतला छोटे कद का श्रीपाल अपनी उम्र से कुछ बड़ा लगता है। अभावों में पला वह खानदानी माली है। कहते हैं कि उसके पिता भी हमारे स्कूल में माली थे और उनके पिता देश की स्वतंत्रता से पहले किसी राजा के राजमहल में यही कार्य करते थे। श्रीपाल पढ़ा–लिखा तो नहीं है पर उसे अपने काम की बहुत अच्छी समझ है। उसकी समझ का परिणाम ही तो मेरे स्कूल में चारों तरफ फैली हरियाली और फूलों की इंद्रधनुषी छटा है।

कोई भी ऐसा नहीं जो मेरे स्कूल में आया हो और उसने यहां उगे पेड़–पौधों और फूलों की प्रशंसा न की हो। श्रीपाल का सौंदर्य बोध तो बड़ी उच्च कोटि का है। उसे रंग–योजना की अच्छी समझ है। वह फूलों की क्यारियां इस प्रकार तैयार करता है कि हरे–भरे घास के मैदानों में तरह–तरह के रंगों की अनूठी शोभा बरबस यह सोचने को विवश कर देती है कि कितना बड़ा खिलाड़ी है रंगों का हमारा माली जो ईश्वर के रंगों को इतनी सोच–समझ कर व्यवस्था प्रदान करता है। उसकी पेड़–पौधों की कलाकारिता स्कूल के प्रवेश द्वार से ही अपने रंग दिखाना शुरू कर देती है। चार भिन्न–भिन्न रंगों की सदाबहार झाड़ियों से उसने स्कूल का पूरा नाम ऊँचाई से नीचे की ओर ढलान पर इतने सुंदर ढंग से तैयार किया हुआ है कि सड़क से गुजरने वाले हर व्यक्ति की नजर उस पर अवश्य जाती है और वह मन ही मन उस कला पर मुग्ध होता है।

प्रायः लोग मानते हैं कि कैक्टस तो कॉटों का झुरमुट होते हैं पर श्रीपाल ने स्कूल में कंकर–पत्थरों से रॉकरी बनाकर उस पर कैक्टस इतने सुंदर ढंग से लगाए हैं कि बस उनका कंटीला सौंदर्य देखते ही बनता है। सौ–डेढ़ सौ से अधिक प्रकार के कैक्टस हैं उस रॉकरी में। कई तो फुटबॉल जैसे गोल मटोल और भारीभरकम हैं। कई मोट–मोटे तने वाले कैक्टस बड़े ही आकर्षक हैं।

हमारे स्कूल का परिसर बहुत बड़ा है और उस सारे में श्रीपाल की कला फूलों और पौधों के रूप में व्यवस्थित रूप से बिखरी हुई है। श्रीपाल की सहायता के लिए तीन माली और भी हैं पर वे सब वहीं करते हैं जो श्रीपाल उनसे करने के लिए कहता है। श्रीपाल बहुत मेहनती है। वह सर्दी–गर्मी, धूप–वर्षा, धुंध–आंधी आदि सब स्थितियों में खुरपा हाथ में लिए काम करता दिखाई देता है। वह परिश्रमी होने के साथ–साथ स्वभाव का बहुत अच्छा है। उसने स्कूल के सारे विद्यार्थियों को इतने अच्छे ढंग से समझााया है कि वे स्कूल में लगे फूलों की सराहना तो करते है पर उन्हें तोड़ते नहीं हैं। वैसे स्कूल प्रशासन ने भी जगह–जगह 'फूल न तोड़ने', 'पौधों की रक्षा करने' आदि की पट्टिकाएं जगह–जगह पर लगाई हुई हैं।

श्रीपाल सदा स्कूल की ड्रेस पहनता है तथा सभी से नम्रतापूर्वक बोलता है। उसे ऊँची आवाज में बोलते, लड़ते–झागड़ते कभी नहीं देखा। वास्तव में ही उसके कारण हमारा स्कूल फूलों की सुगंध से महकता रहता है।

एक कामकाजी औरत की शाम

हमारे देश में मध्यवर्गीय परिवारों के लिए अति आवश्यक हो चूका है कि घर परिवार को ठीक प्रकार से चलाने के लिए पति–पत्नी दोनों धन कमाने के लिए काम करें और इसीलिए समाज में कामकाजी औरतों की संख्या निंरतर बढ़ती जा रहीं है। कामकाजी औरत की जिंदगी पुरुषों की अपेक्षा कठिन है। वह घर–बाहर एक साथ संभालती है। उसकी शाम तभी आरंभ हो जाती है जब वह अपने कार्यस्थल से छुट्टी के बाद बाहर निकलती है। वह घर पहुंचने से पहले ही रास्ते में आने वाली रेहड़ी या बाजार से फल–सब्जियां खरीदती है, छोटा–मोटा किरयाने का सामान लेती है और लदी–फदी घर पहुँचती है। तब तक पति और बच्चे भी घर पहुँच चुके होते हैं। दिन भर की थकी हारी औरत कुछ आराम करना चाहती है पर उससे पहले चाय तैयार करती हैं। यदि वह औरत संयुक्त परिवार में रहती है तो कुछ और तैयार करने की फरमाइशें भी उसे पूरी करनी पड़ती है। चाय पीते–पीते वह बच्चों से, बड़ों से बातचीत करती है। यदि उस समय कोई घर में मिलने–जुलने वाला आ जाता है तो सारी शाम आगंतुकों की सेवा में बीत जाती है। लेकिन यह ऐसा नहीं हुआ तो भी उसे फिर से बाजार या कहीं और जाना पड़ता है ताकि घर के लोगों की फरमाइशों को पूरा कर सके। लौट कर बच्चों को होमवर्क करने में सहायता देती है और फिर रात के खाने की तैयारी में लग जाती है। कभी–कभी उसे आस–पड़ोस के घरों में भी औपचारिकता वश जाना पड़ता है। कामकाजी औरत तो चक्कर धिन्नी की तरह हर पल चक्कर ही काटती रहती है। उसकी शाम अधिकतर दूसरों की फरमाइशों को पूरा करने में बीत जाती है। वह हर पल चाहती है कि उसे भी घर में रहने वाली औरतों के समान कभी शाम अपने लिए मिले पर प्रायः ऐसा ही नहीं पाता क्योंकि कामकाजी औरत का जीवन तो घड़ी की सुइयों से बंधा होता है।

1. निम्नलिखित विषयों पर फीचर लेखन तैयार कीजिएः—

क. यमुना जल की स्वच्छता के प्रयास हेतु अभियान
ख. पाँव पसारता हुआ आतंकवाद
ग. युवा पीढ़ी में घटते संस्कार
घ. दूरदर्शन — कल और आज
ड़. तनाव कैसे दूर करें?
च. अद्भुत व्यक्तित्व— राधाकृष्णन
छ. बच्चों में हीन भावना कैसे दूर करें?
ज. मुंबई का गणेशोत्सव
झ. पर्यटन का केन्द्र — ताजमहल
अ. कुल्लू का दशहरा
ट. साक्षात्कार की तैयारी कैसे करें?
ठ. 26 जनवरी का महत्व
ड. सड़क किनारे पत्थर तोड़ती मजदूरिन।
ढ. स्कूल पहुँचने से पहले।
ण. सड़कों पर बढ़ती वाहनों की भीड़।
त. परीक्षा भवन में परीक्षा का पहला दिन

2. प्रशासनिक सुधार आयोग ने चौथी रिपोर्ट सरकार को सौंपी जिसमें प्रशासन सुधारने पर विशेष सुझाव दिए हैं।सरकार इन सिफारिशों पर क्या कार्रवाई करती है? इस विषय पर संपादकीय लिखिए।
3. 'हमें झुग्गीवसियों के साथ एक कार्यशाला में भाग एवं उनकी शोचनीय दशा देखनें का अवसर मिला'। इस पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।
4. 'हर साल बच्चों की हत्या और अपहरण की घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं' अपने विद्यालय की पत्रिका केलिए शोध के उपरांत एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।
5. लोकतंत्र से देश की रक्षा कैसी की जा सकती है? युवा—पीढ़ी का इसमें क्या योगदान है? इन बिन्दुओं के आधार पर एक आलेख तैयार कीजिए।
6. दिल्ली के मास्टर प्लान की चर्चा आज चारों ओर है— इस विषय पर आलेख लिखिए।
7. हरियाणा में परिसीमन आयोग ने विभिन्न क्षेत्रों के नाम बदल दिए तथा कुछ विधानसभा क्षेत्रों को आरक्षित कर दिया। इसके संभावित परिणामों पर संपादकीय लिखिए।
8. दक्षेस के वाणिज्य मंत्रियों की बैठक हुई है। इसमें पाक ने भारत से उदार व्यापार नीति अपनाने का आग्रह किया है। एक रिपोर्ट बनाइए।
9. बायोटेक क्षेत्र में एशिया के प्रमुख केंद्रों के रूप में भारत उभर रहा है। एक रिपोर्ट बनाइए।
10. दिल्ली के मास्टर प्लान की चर्चा जोरों पर है। इस संदर्भ में नगर नियोजन के क्या तरीके अपनाने चाहिए।—इस विषय पर आलेख तैयार कीजिए।

खंड—ग

7. काव्यांश पर आधारित अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

प्रश्न– निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. मैं जग–जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ!
मैं स्नेह–सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ!

क. ये पंक्तियाँ किस कविता से ली गई हैं और इसके कवि कौन हैं?
ख. 'जग जीवन का भार और फिर भी जीवन से प्यार' – यहाँ कवि ने जीवन के संदर्भ में यह विरोधी बात क्यों कही है?
ग. कवि स्नेह–सुरा का पान कैसे करता है?
घ. 'जग पूछ रहा उनको जो जग की गाते' से कवि का क्या अभिप्राय है?

उत्तर :– क. कवि – हरिवंश राय बच्चन
कविता – आत्म परिचय

ख. क्योंकि दोनो कवि और संसार अलग–अलग प्रवृत्तियों के हैं। कवि को संसार अपूर्ण लगता है और वह उसके अवसाद, दुख–दर्द में भी खुशी तलाश लेता है।

ग. कवि प्रेम की मादकता, उसके पागलपन को हर पल महसूस करता रहता है – मानो किसी ने उसके जीवन को प्रेम–स्पर्श देकर उसके मन की झंकृत कर दिया हो।

घ. इससे यह अभिप्राय है कि संसार उन्हे ही आदर–सम्मान देता है जो संसार का गुणगान करते हैं, उनका सम्मान नही करता जो संसार की इच्छा से नहीं अपितु अपनी इच्छा से गीत गाते हैं।

2. बात सीधी थी पर एक बार
भाषा के चक्कर में
जरा टेढ़ी फॅस गई।
उसे पाने की कोशिश में
भाषा को उलटा–पलटा
तोड़ा–मरोड़ा
घुमाया–फिराया
कि बात या तो बने
या फिर भाषा से बाहर आए –
लेकिन इससे भाषा के साथ–साथ
बात और भी पेचीदा होती चली गई।
सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना
मैं पेंच को खोलने के बजाए
उसे बेतरह कसता चला जा रहा था
क्योंकि इस करतब पर मुझे
सा़फ सुनाई दे रही थी
तमाशबीनों की शाबाशी और वाह–वाह।

प्रश्नः—
क. ये पंक्तियाँ किस कविता से ली गई हैं और इसके कवि कौन हैं?
ख. बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, किन्तु कभी—कभी भाषा के चक्कर में 'सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है।' स्पष्ट कीजिए कैसे?
ग. इन काव्यपंक्तियों के आधार पर बताइए कि हमें भाषा का प्रयोग कैसे करना चाहिए?
घ. 'क्योंकि .... वाह वाह' — इसका भावार्थ स्पष्ट कीजिए।
उत्तर :—
क. कवि — श्री कुवँर नारायण 1
कविता — बात सीधी थी पर

ख. भाषा और बात में परस्पर संबंध है कई बार भाषा में का शब्दजाल कवि अपनी बात को प्रभावी बनाने के लिए बुनता है, तारीफ़ पाने के लिए बुनता है। फिर इसी जाल में फँसकर बात अपना अर्थ और स्वरूप खोकर टेढ़ी हो जाती है।

ग. जिस बात को हम सीधी सरल भाषा में बोलकर अभिव्यक्त कर सकते हैं, उसके लिए पेचीदा शब्द जाल नहीं बुनना चाहिए। भाषा को सहज रूप से प्रयोग किया जाना चाहिए।

घ. अर्थात् कवि ने भाषा को जितना बनावटी ढंग से और उसे लाग—लपेट करने वाले शब्दों के साथ प्रयोग किया, उस पर उसे उतनी ही अधिक प्रशंसा मिल रही थी।

3. मैं निज उर के उद्‌गार लिए फिरता हूँ,
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ,
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ!
मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख—दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ,
जग भव—सागर तरने को नाव बनाए,
मैं भव मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।
क. ये पंक्तियाँ किस कविता से ली गई है और इसके कवि कौन हैं?
ख. 'निज उर के उद्‌गार व उपहार' — से कवि का क्या तात्पर्य है?स्पष्ट कीजिए।
ग. कवि को संसार अच्छा क्यों नहीं लगता है?
घ. संसार में कष्टों को सहकर भी खुशी का माहौल कैसे बनाया जा सकता है?
उत्तर :—
क. आत्म परिचय — कविता
हरिवंशराय बच्चन — कवि

ख. अपने हृदय के उद्‌गारों ;विचारों को लेकर घूम रहा हूँ और मन के उपहार लिए घूम रहा है।

ग. कवि के अनुसार संसार अपूर्ण है, अधूरा है अतः वह संसार के साथ घुलमिल नहीं पाता। उसें संसार बहुत ही झूठा व बनावटी लगता है।

घ. संसार के कष्टों को सहते हुए हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि रोकर सहें या हँसकर, कष्ट तो सहने ही है फिर क्यों न हँसते हुए जीवन बिताएँ।

4.कविता एक उड़ान है चिड़िया के बहाने
कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने
बाहर भीतर
इस घर, उस घर
कविता के पंख लगा उड़ने के माने
चिड़िया क्या जाने?
कविता एक खिलना है फूलों के बहाने
कविता का खिलना भला फूल क्या जाने!
बाहर भीतर
इस घर, उस घर
बिना मुरझाए महकने के माने
फूल क्या जाने?
कविता एक खेल है बच्चों के बहाने
बाहर भीतर
यह घर, वह घर
सब घर एक कर देने के माने
बच्चा ही जाने।

क. ये पंक्तियाँ किस कविता से ली गई हैं और इसके कवि कौन हैं?
ख. इन काव्य पंक्तियों में 'उड़ने' और 'खिलने' का कविता से क्या संबंध हो सकता है?
ग. कवि 'कविता' और 'बच्चे' को समानांतर क्यों माना है?
घ. कविता के संदर्भ में 'बिना मुरझाए महकने के माने' क्या होते हैं?

उत्तरः—

क. कवि—श्री कुँवर नारायण
कविता—कविता के बहाने

ख. कविता के संबंध में उड़ने का अर्थ है—कल्पना की उड़ान अर्थात् सोच की उड़ान, विचारों की उड़ान ही कविता है। 'खिलने' शब्द को कविता के अर्थ में विकास से जोड़ा जाएगा। कविता विचारों और भावों की परिपक्वता का नाम है। जब हमारे विचार विकास पाते है, भावनाओं का ज्वार संयत हो जाता है, तब कविता रची जाती है। यही कविता में विकास का अर्थ है।

ग. जिस प्रकार बच्चे के सपने असीम हैं, बच्चों के खेल का कोई अंत नहीं है, बच्चे की प्रतिभा, बच्चे में छिपी संभावना का कोई अंत नहीं हैं वैसे ही कविता की कल्पनाएँ असीम हैं, कविता के खेल यानि कविता में किए जाने वाले प्रयोग असीम है। कविता प्रकृति, मनुष्य, जीव, निर्जीव, काल, इतिहास, भावी जीवन अनेक विषयों पर लिखी जा सकती है अर्थात् इसके खेल भी असीम है। कविता में भावों और रचनात्मकता का गुण वैसे ही जान फूँक

देता है, जैसे बच्चे में कभी न थकने वाला, सदा कुछ–न कुछ करने वाला तत्व विद्यमान होता है।

घ. एक पुष्प खिलता है, महकता है, अपनी ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करता है, लेकिन एक निश्चित समय के बाद उसकी आयु समाप्त हो जाती है, वह मुरझा जाता है। कविता में जो भाव और विचार हैं, वे सदा–सर्वदा यथावत बने रहते हैं। उनके मुरझाने की कोई समय सीमा नहीं होती। जैसे 'पुष्प की अभिलाषा' नामक कविता पचास वर्ष पूर्व लिखी गई थी, मगर आज भी वह उसी भाव की व्यंजना करती है।

ङ. जन्म से ही वे अपने साथ ....लचीले वेग से अक्सर।

क. कवि तथा कविता का नाम बताइए।
ख. पृथ्वी की बैचेनी का कारण बताइए।
ग. बच्चे छत पर कैसे भागते हैं?
घ. बच्चों की मनोदशा के विषय में बताओ।

उत्तरः–

क. कविता–पतंग। कवि– आलोक धन्वा।
ख. कवि कहता है कि बच्चे कपास की तरह कोमल व नरम होते हैं। उनके चंचल पैरों को देखकर ऐसा लगता है कि पृथ्वी स्वयं उनके पैरों के पास घूमती हुई आती है।
ग. बच्चे तेजी से बेसुध होकर दौड़ते हैं।छत भी उन्हे नरम लगती है। जब वे चलते हैं तो मानो दिशाएं मृदंग बजाती हैं।वे डाली की तरह लचीले होकर भागते हैं।
घ. खेलते समय बच्चों को कोई ध्यान नहीं रहता। उनकी आंखें पतंगों की तरफ होती हैं। वे तन्मयता से अपने खेल में लीन रहते हैं।

च. ममता के बादल की मॅंडराती..बरदाश्त नहीं होती है।

क. कवि तथा कविता का नाम बताइए।
ख. कवि की प्रेमिका का व्यवहार कैसा है?उसका कवि पर क्या प्रभाव पड़ता है?
ग. कवि प्रेमिका से अलग क्यों होना चाहता है?
घ. कवि भविष्य के प्रति आशंकित क्यों है?

उत्तरः–

क. कविता–सहर्ष स्वीकारा है। कवि– गजानन माधव मुक्तिबोध।
ख. कवि की प्रेमिका उस पर ममता के बादल बरसाती है। उसकी कोमलता उसे नित्य पीड़ा पहुॅंचाती है क्योंकि कचि की आत्मा बहुत कमजोर हो गई है।उस पर भविष्य की चिंताएं हावी हैं।
ग. कवि को आभास होता है कि आगे क्या होगा? उसकी प्रेमिका उसे जीवन–साथी के रूप में मिल भी पाएगी या नहीं।इस कारण वह छटपटाता रहता है।उसकी आत्मीयता, सांत्वना, सहलाहट अब कवि से सहन नहीं होती। इसलिए कवि चाहता है कि वह उसे अपने से अलग करने का दंड दे।

घ. कवि अपने भविष्य के प्रति आशंकित है। वह अपनी प्रिया के स्नेह के अभाव में अकेला रहने से घबराता है।

8. काव्य–सौंदर्य पर आधारित प्रश्न

निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. मैं स्नेह सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग को गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ।

(क) इस काव्यांश का भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
(ख) इस काव्यांश का शिल्प सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
(ग) 'मैं अपने मन का गान किया करता हूँ' से कवि का क्या आशय है ?

उत्तर–(क) हरिवंशराय बच्चन द्वारा रचित कविता आत्मपरिचय के इस काव्यांश में कवि ने संसार की स्वार्थपरता का चित्रांकन किया है। वे कहते हैं कि मैं तो प्रेम रूपी मदिरा का पान कर उसकी मस्ती में मस्त रहता हूँ। इसमें कवि ने संसार की स्वार्थपरता का चित्रण किया है कि यह संसार केवल उनको पूछता है जो इसकी चापलूसी करते हैं।

(ख) प्रस्तुत काव्यांश में खड़ी बोली भाषा का प्रयोग है जो सरल, सरस एवं प्रवाहमयी है। स्नेह–सुरा में रूपक अलंकार की छटा शोभनीय है। अनुप्रास, स्वरमैत्री तथा पदमैत्री अलंकारों की शोभा है। संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्दों का सफल प्रयोग है। गीति शैली का प्रयोग है। मुक्तक छंद है। माधुर्य गुण है। श्रृंगार एवं शांत रस है। अभिधा शब्द शक्ति का प्रयोग है। बिंब योजना अत्यंत सुंदर है।

(ग) कवि अपनी मस्ती में डूबकर अपने मन की भावनाओं को गीतों के रूप में गुनगुनाते हुए अपने आप में मग्न रहता है।

(2) सबसे तेज़ बौछारें गईं भादों गया
सवेरा हुआ
खरगोश की ऑखों जैसा लाल सवेरा
शरद आया पुलों को पार करते हुए
अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए
घंटी बजाते हुए जो–जोर से।

(क) इस काव्यांश में कवि किसका वर्णन कर रहा है ?
(ख) इस काव्यांश की भाषा, अलंकार, छंद आदि का परिचय दीजिए।
(ग) प्रस्तुत काव्यांश का बिंबविधान स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–(क) प्रस्तुत काव्यांश आलोक धन्वा द्वारा रचित 'पंतंग' नामक कविता से अवतरित है, जिसमें कवि ने प्राकृतिक सौंदर्य के परिवर्तन का सजीव चित्रण करते हुए शरद श्रृतु का मानवीकरण किया है।

(ख) भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। संस्कृत के तत्सम तद्भव और विदेशी शब्दों का प्रयोग है। शरद का मानवीकरण किया गया है। अतः इसमें मानवीकरण अलंकार है। अनुप्रास, उपमा, पुनरुक्ति प्रकाश, पदमैत्री अलंकारों की शोभा है। कोमलकांत पदावली है। प्रसाद गुण है। अभिधा शब्द शक्ति का प्रयोग है। मुक्तक छंद है। बिंब योजना अत्ययंत सुंदर एवं सटीक है।

(ग) कवि ने गतिशील बिंब योजना का सजीव चित्रण किया है। इसमें चाक्षुक बिंब का समायोजन भी किया गया है।

(3) उससे पूछेंगे तो आप क्या अपाहिज हैं ?
तो आप क्यों अपाहिज हैं ?
आपका अपाहिजपन तो दुःख देता होगा
देता है ?
(कैमरा दिखाओ इसे बड़ा–बड़ा)
हॉ तो बताइए आपका, दुःख क्या है
जल्दी से बताइए वह दुःख बताइए
बता नहीं पाएगा।

(क) इस काव्यांश में कवि ने किन के प्रति संवेदना व्यक्त की है ?
(ख) इस काव्यांश के भाषा एवं शिल्पगत सौंदर्य का वर्णन कीजिए।
(ग) इस काव्यांश में एक पंक्ति कोष्ठक में क्यों रखी गई है ?

उत्तर–(क) प्रस्तु काव्यांश रघुबीर सहाय द्वारा रचित 'कैमरे में बंद अपाहिज' नामक कविता में अवतरित है। इस काव्यांश में कवि ने शारीरिक रूप से दुर्बल व्यक्तियों के प्रति संवेदना व्यक्त की है।

(ख) भाषा खड़ी बोली सरल, सरस है। तत्तसम, तद्भव और विदेशी शब्दावली का प्रयोग हुआ है। अनुप्रास, प्रश्नालंकार, पदमैत्री, स्वरमैत्री अलंकारों का चित्रण है। बिंब योजना अत्यंत सार्थक एवं सटीक है। भावपूर्ण शैली का प्रयोग है। करुण रस है।

(ग) कवि ने अपनी बात को सार्थकता और विशिष्टता प्रदान करने के लिए इस काव्यांश में एक पंक्ति को कोष्ठक में रखा है। यह कवि पर प्रयोगवादी शिल्प का प्रभाव है। पाठकों का ध्यान भी कविता में व्यक्त भावों की ओर खींचा जाता है।

(4) इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है

या मेरा जो होता–सा लगता है, होता–सा संभव है
सभी वह तुम्हारे ही कारण के कार्यों का घेरा है, कार्यों का वैभव है।

(क) कवि अपना सब कुछ किसे समर्पित कर रहा है ?
(ख) इस कावयांश का शिल्प–सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
(ग) 'कार्य' शब्द के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है ?

उत्तर–(क) प्रस्तुत काव्यांश गजानन माधव मुक्तिबोध द्वारा रचित 'सहर्ष स्वीकारा है' कविता से अवतरति है। इस काव्यांश में कवि ने जीवन में अपना सब कुछ असीम सत्ता को समर्पित किया है।

(ख) खड़ी बोली भाषा का प्रयोग है। रहस्यात्मक भावना दृष्टिगोचर होती है। मुक्तक छंद का प्रयोग है। प्रसाद गुण है। अनुप्रास, संदेह, उपमा, पदमैत्री, स्वरमैत्री अलंकारों की छाटा है। बिंब योजना अत्यंत सार्थक एवं सटीक है। भावपूर्ण शैली का प्रयोग है।

(ग) कवि के अनुसार मनुष्य के कार्य ही उसे सुख–दुःख देते है, उसे सबलता और साहस प्रदान करते हैं।

(5) बार–बार गर्जन
वर्षण है मूसलधार
हृदय थाम लेता संसार
सुन–सुन घोर वज्र हुंकार।

(क) प्रस्तुत काव्यांश का मूलभाव क्या है ?
(ख) इस काव्यांश के शिल्प सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।
(ग) 'हृदय थाम लेता' की सार्थकता पर विचार कीजिए।

उत्तर–(क) प्रस्तुत काव्यांश सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित कविता 'बादल राग' से ली गई है। कवि बादल को क्रांति का प्रतीक मानकर उसकी क्रांतिपूर्ण गर्जना को सुनकर संसार के भयभीत हो जाने का वर्णन कर रहा है।

(ख) इस काव्यांश में कवि ने ओजपूर्ण भाषा का प्रयोग किया है। खड़ी भाषा के साथ संस्कृत के तत्सम व तद्भव शब्दों का प्रयोग है। मुक्तक छंद का प्रयोग है। प्रतीकात्मक शैली का भावपूर्ण प्रयोग हुआ है। बार–बार, सुन–सुन में शब्दावृत्ति होने से पुनरुक्ति प्रकाश की छटा है। पदमैत्री, रूपक अलंकार की शोभा है। कथन में प्रवाहमयता एवं ध्वन्यात्मकता का समायोजन है। ओजगुण है। वीर रस का प्रयोग है।

(ग) 'हृदय थाम लेना' मुहावरे का सटीक एवं सार्थक प्रयोग किया गया है क्योंकि बादलों की भयंकर गर्जना सुनकर सभी भयभीत हो जाते हैं।

(6) नील जल में या
किसी की गौर, झिलमिल देह जैसे हिल रही हो।
और.................
जादू टूटता है इस उषा का अब : सूर्योदय हो रहा है।

(क) इस काव्यांश का भाव–सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
(ख) इस काव्याश में प्रयुक्त भाषा एवं अलंकारों का परिचय दीजिए।
(ग) इस काव्यांश में प्रयुक्त बिंब–योजना को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–(क) शमशेर बहादुर सिंह द्वारा रचित 'उषा' से ली गई इन पंक्तियों में कवि ने सूर्योदय से पूर्व के आकाश को शोभा के चित्रण में बड़ी सूक्ष्म दृष्टि तथा मौलिक कल्पना का परिचय दिया है। आकाश में उभरने वाले क्षणिक रंग का बड़ा सजीव चित्रण है। नीले जल में झिलमिलाती गोरी देह का शब्द चित्र पाठक पर जादू का सा प्रभाव डालता है।

(ख) उत्प्रेक्षा तथा अनुप्रास अलंकारों का प्रयोग है। सरस तथा मधुर शब्दावली का प्रयोग है। नीला जल नीले आकाश का तथा झिलमिलाता देह उगते सूर्य का प्रतीक है। नीले आकाश की उज्ज्वलता का भी भावपूर्ण चित्रण है।

(ग) कवि ने उषा काली वातावरण का सजीव चित्रण करते हुए चाक्षुक बिंब–विधान किया है। चित्रमयता के गुण के कारण संपूर्ण दृश्य ही पाठकों के नेत्रों के सम्मुख सजीव हो उठता है।

(7) जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।।
अस मम जिवन बंधु बिनुं तोही। जौं जड़ देव जिआवै मोही।।

(क) इस काव्यांश का प्रसंग स्पष्ठ कीजिए।
(ख) इस काव्यांश की भाषा कौन सी है ? प्रयुक्त अलंकारों और छंद का उल्लेख भी कीजिए।
(ग) लक्ष्मण के वियोग में संतप्त राम की दशा का वर्णन कीजिए।

उत्तर–(क) प्रस्तुत काव्यांश 'तुलसीदास' 'रामररितमानस' के लक्ष्मण मूर्छा औार राम का विलाप प्रसंग से अवतरित है। इसमें कवि ने लक्ष्मण मूर्छा के पश्चात् श्रीराम के व्यथित हृदय की करुण दशा का चित्रण किया है।

(ख) भाषा तत्सम प्रधान अवधी है चौपाई छंद है। अनुप्रास, पदमैत्री, उदाहरण, विभावना अलंकारों की छटा दर्शनीय है। करुण रस का मार्मिक चित्रण है।

(ग) लख्मण के वियोग में संतप्त श्रीराम की मानसिक दशा का वर्णन करने के लिए कवि ने स्पष्ट किया है कि जैसे पंखों के बिना पक्षी व्याकुल हो जाते हैं वेसे ही लक्ष्मण के मूर्छित हो जाने पर श्रीराम दुःखी हो रहे हैं।

(8) दारिद–दसानन दबाई दुनी,दुनी दीनबंधु।
दुरित–दहन देखि तुलसी हहा करी।।

(क) प्रस्तुत काव्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए।
(ख) इस काव्यांश का शिल्प सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
(ग) 'हहा' शब्द का प्रयोग में निहित भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–(क) प्रस्तुत कवित्त गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित कवितावली से लिया गया है। इसमें कवि ने संसार में फैले गरीबी रूपी रावण का वर्णन किया है तथा प्रभु राम से यह प्रार्थना की है कि वह गरीबी रूपी रावण को नष्ट करें।

(ख) प्रस्तुत कविता में 'द' वर्ण की बार–बार आवृत्ति होने से अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है। 'दारिद–दसानन' में रूपक अलंकार की शोभा है। कवित्त छंद का प्रयोग है। तत्सम प्रधान ब्रजभाषा का प्रयोग है। भावपूर्ण शैली का चित्रण है।

(ग) 'हहा' शब्द के माध्यम से कवि स्वयं को अत्यंत दीनहीन स्थिति में लाकर अपने आराध्य से सांसारिक कष्टों से मुक्ति दिलवाने की प्रार्थना करता है।

9. खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,
बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।
जीविका बिहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहें एक एकन सों 'कहाँ जाई, का करी
बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलोकिअत,
साँकरे सबैं पै, राम! रावरें कृपा करी।
दारिद–दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु!
दुरित–दहन देखि तुलसी हहा करी।।

क. किसान, व्यापारी, भिखारी और चाकर किस बात से परेशान हैं?
ख. बेदहूँ पुरान कही .... कृपा करी' – इस पंक्ति का भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
ग. कवि ने दरिद्रता को किसके समान बताया है और क्यों?
उत्तर :–
क. किसान को खेती के अवसर नहीं मिलते, व्यापारी के पास व्यापार की कमी है, भिखारी को भीख नही मिलती और नौकर को नौकरी नही मिलती।

ख. वेद–पुराण में भी यही लिखा है कि भगवान श्री राम की कृपा दृष्टि पड़ने पर ही दरिद्रता

दूर हो सकती है।

ग. दरिद्रता को दस मुख वाले रावण के समान बताया है क्योंकि वह भी रावण की तरह समाज के हर वर्ग को प्रभावित कर अपना अत्याचार चक्र चला रही है।

10.उहाँ राम लछिमनहि निहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी।।
अर्ध राति गइ कपि नहिं आयउ। राम उठाइ अनुज उर लायऊ।।
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ।।
मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता।।
सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि मम बच बिकलाई।।
जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पितु बचन मनतेउँ नहिं बारा।।
सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।
अस बिचारि जियैं जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।।
जथा पंख बिन खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।।
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही।।
जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतू प्रिय भाइ गँवाई।।
बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं।।
क. काव्यांश के भाव सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।
ख. इन पंक्तियों को पढ़कर राम–लक्ष्मण की किन–किन विशेषताओं का पता चलता है?
ग. अंतिम दो पंक्तियों को पढ़कर हमें क्या सीख मिलती है?
उत्तर :–
क. विष्णु भगवान के अवतार भगवान श्री राम का मनुष्य के समान व्याकुल होना, आज के युग में जब लोग अपने भाइयों से झगड़ते रहते हैं, तो राम, लक्ष्मण और भरत का यह परस्पर अगाध प्रेम हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है।

ख. दोनो भाइयों में परस्पर अगाध प्रेम था। श्री राम अनुज से बहुत लगाव रखते थे तथा दोनों में पिता–पुत्रा का सा संबंध था। वहीं लक्ष्मण श्री राम का बहुत सम्मान करते थे।

ग. भगवान श्री राम के अनुसार संसार के सब सुख भाई पर न्यौछावर किए जा सकते हैं। भाई के अभाव में जीवन व्यर्थ है और भाई जैसा कोई हो ही नहीं सकता। आज के युग में यह सीख अनेक सामाजिक कष्टों से मुक्त करवा सकती है।

11. किसबी, किसान–कुल, बनिक, भिखारी, भाट,
चाकर, चपल नट, चोर, चार चेटकी।
पेटको पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटत गहन–गन अहन अखेटकी।।
उँचे–नीचे करम, धरम–अधरम करि,
पेट ही को पचत, बेचत बेटा–बेटकी।
'तुलसी' बुझाइ एक राम घनस्याम ही तें,
आगि बड़वागितें बड़ी है आगि पेटकी।।
क. इन काव्यपंक्तियों का भाव–सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

ख. पेट की आग को कैसे शाँत किया जा सकता है?
ग. 'पेट को पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि' – इस पंक्ति से कवि का क्या अभिप्राय है?
उत्तरः–
क. इस समाज में जितने भी प्रकार के काम हैं, वह सभी पेट की आग वशीभूत होकर किए जाते हैं। 'पेट की आग' विवेक नष्ट करने वाली है। ईश्वर की कृपा के अतिरिक्त कोई इस पर नियंत्रण नहीं पा सकता।

ख. पेट की आग भगवान राम की कृपा के बिना नहीं बुझ सकती है। अर्थात् राम की कृपा ही वह जल है, जिससे इस आग का शमन हो सकता है।

ग. अर्थात् सभी पेट का गुण पढ़कर काम करते हैं, सभी पेट की भूख मिटाने के लिए काम करते हैं।

12. हरषि राम भेंटेउ हनुमाना। अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना।।
तुरत बैद तब कीन्हि उपाई। उठि बैठे लछिमन हरषाई।।
हृदयँ लाइ प्रभु भेंटेउ भ्राता। हरषे सकल भालु कपि ब्राता।।
कपि पुनि बैद तहाँ पहुँचावा। जेहि बिधि तबहिं ताहि लइ आवा।।
यह बृतांत दसानन सुनेउ। अति बिषाद पुनि पुनि सिर धुनेउ।।
ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा। बिबिध जतन करि ताहि जगावा।।
जागा निसिचर देखिअ कैसा। मानहुँ कालु देह धरि बैसा।।
कुंभकरन बूझा कहु भाई। काहे तव मुख रहे सुखाई।।
कथा कही सब तेहिं अभिमानी। जेहि प्रकार सीता हरि आनी।।
तात कपिन्ह सब निसिचर मारे। महा महा जोधा संघारे।।
दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी। भट अतिकाय अकंपन भारी।।
अपर महोदर आदिक बीरा। परे समर महि सब रनधीरा।।
क. काव्यांश का भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
ख. इन पंक्तियों के आधार पर हनुमान की विशेषताएँ बताइए।
ग. रावण ने अपने भाई कुंभकरण को क्यों जगाया?इससे उसके बारे में क्या पता चलता है?
उत्तरः–
क. राम भक्त हनुमान की बहादुरी व कर्मठता का वर्णन है तथा साथ ही अहंकारी रावण की हताशा व दुख का वर्णन किया है।

ख. हनुमान जी की वीरता और कर्मनिष्ठा ऐसी है कि वे दुख में व्याकुल नहीं होते और हर्ष में कर्तव्य नहीं भूलते, बैठकर रोने के स्थान पर संजीवनी लाए और काम होते ही वैद्य को यथास्थान पहुँचाया। सत्य के पक्ष में जो कुछ भी होता है, वह असत्य के लिए कष्ट का कारण बनता है। राम का हर्ष ही रावण का शोक है।

ग. लंबे समय से सोए हुए भाई को रावण अपने दुख और अहंकार से अवगत करवा रहा है। इससे ज्ञात होता है कि अहंकारी को सदैव नीचा ही देखना पड़ता है।

13. नहला के छलके–छलके निर्मल जल से

उलझे हुए गेसुओं में कंघी करके
किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को
जब कहुनियों में लेके है पिन्हाती कपड़े।।

(क) इस काव्यांश में चित्रित दृश्य का वर्णन कीजिए।
(ख) इस काव्यांश का भाषा सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
(ग) इस काव्यांश में प्रयुक्त रस, छंद, अलंकार का परिचय दीजिए।

उत्तर–(क) प्रस्तुत रुबाई फिराक गोरखपुरी द्वारा रचित 'रुबाइयों' से अवतरित है। इसमें कवि ने बच्चे को नहलाती हुई मॉ की स्वाभाविक वृत्ति का सजीव चित्रण किया है। मॉ बच्चे को निर्मल जल से लहलाकर उसको कंघी करती है। तत्पश्चात् उसे अपनी गोदी में बिठाकर उसे कपड़े पहनाती है।

(ख) भाषा सरल, सरस, सुबोध, खड़ी बोली है। संस्कृत के तत्सम, तद्भव, विदेशी और देशज शब्दावली का प्रयोग है।

(ग) वात्सल्य रस की अभिव्यक्ति हुई है। प्रसाद गुण है। अमिधा शब्द शक्ति का प्रयोग है। भावपूर्ण शैली है। बिंब योजना अत्यंत सुंदर एवं सटीक है। छलके–छलके में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है। अनुप्रास, पदमैत्री, स्वाभाविक, उल्लेख, स्वरमैत्री अलंकारों की छटा है। रुबाई छंद है।

(14) तेरे गम का पासे अदब है कुछ दुनिया का ख्याल भी है
सबसे छिपा के दर्द के मारे चुपके–चुपके रो लें हैं।

(क) प्रस्तुत काव्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए।
(ख) इस काव्यांश के शिल्प–पक्ष का परिचय दीजिए।
(ग) 'सबसे छिपा के दर्द के मारे चुपके–चुके रो लेते हैं का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–(क) प्रस्तुत काव्यांश फिराक गोरखपुरी द्वारा रचित 'गजल' से अवतरित है। इस काव्यांश में कवि ने अपनी प्रिया के प्रति प्रेमभाव प्रकट करते हुए अपनी विरह व्यथा का चित्रण किया है। कवि का कथन है कि हे प्रिय! मैं तेरे गम का सम्मान करता हूं लेकिन मुझे दुनिया से डर लगता है। इसलिए हम तो गम में डूबकर दर्द के मारे दुनिया से छिपकर चुपके–चुपके रोते हैं।

(ख) श्रृंगार रस की वियोगावस्था का मार्मिक चित्रण है। माधुर्य गुण है। बिंब योजना अत्यंत सार्थकता एवं प्रसंगानुकूल हैं। अनुप्रास, पदमैत्री, स्वरमैत्री अलंकारों की शोभा है। 'चुपके–चुपके' में शब्दावृत्ति होने से पुनरुक्ति प्रकाश की छाटा है। उर्दू, फारसी व बोलचाल की भाषा सरल, सरस है। गज़ल छंद का प्रयोग है।

(ग) कवि किसी के सामने अपनी व्यथा नहीं करना चाहता इसलिए वह अपने दर्द को अपने मन में छिपा लेता है और दुनिया वालों की नज़रों से दूर कहीं छिप कर रोता है।

9. काव्य पर लघुउत्तरीय प्रश्न

क. 'छोटा मेरा खेत' कविता में 'बीज गल गया निःशेष' से क्या तात्पर्य है?
ख. .फ़िराक की गजल में प्रकृति को किस तरह चित्रित किया गया है?
ग. 'बादल—राग' शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।
घ. **'किशोर और युवा वर्ग समाज का मार्गदर्शक है।'** — **'पतंग'** कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
ड़. **'कैमरे में बंद अपाहिज'** शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।
च. **'छोटा मेरा खेत'** कविता में **'कागज़ का एक पन्ना'** और **'खेत'** में किस आधार पर समानता दर्शायी गई है?
छ. कविता एक ओर जग—जीवन का भार लिए घूमने की बात करती है और दूसरी ओर ''मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ।'' विपरीत से लगते इन कथनों का क्या आशय है ?
ज. बच्चे किस बात की आशा में नीड़ों से झॉक रहे होंगे ?
झ. 'सबसे तेज़ बौछारें गईं, भादो गया' के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है, उसका वर्णन अपने शब्दों में करें।
अ. पंतंगों के साथ—साथ वे भी उड़ रहे हैं—कवि ने बच्चों के लिए ऐसा क्यों कहा है ?

ट. बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, किंतु कभी—कभी भाषा के चक्कर में 'सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है' कैसे ?

ठ. कैमरे में बंद अपाहिज करुणा के मुखोटे में छिपी क्रूरता की कविता है—विचार कीजिए।

ड. 'हम समर्थ शक्तिवान और हम एक दुर्बल को लाऍगे' पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया है ?

ड. इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने टेलीविज़न कैमरा तथा दूरदर्शन वालों पर व्यंग्य किया है जो अपने आपको हर तरह से समर्थ मानकर किसी अपाहिज व्यक्ति की संवेदनाओं से खिलवाड़ करते हैं। ये शारीरिक चुनौती झेलते लोगों की दुर्बलता का बार—बार अहसास कराकर उन्हें कुंठित करते हैं। जो अपनी प्रसिद्धि के लिए दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुॅचाते हैं।

उत्तर :–

क. कविता की खेती में कवि ने कागज़नुमा खेत पर आई विचारों की आँधी का उल्लेख किया है। इसी के परिणामस्वरूप वह क्षण आया जब लेखन आरंभ हुआ। कल्पनाओं के प्रभाव से वह क्षण गौण हो गया और कविता का जन्म हुआ, जैसे खेत में रोपा हुआ बीज लुप्त होकर अंकुर और पौधे को जन्म देता है। इसके अतिरिक्त नवीन सृजन के लिए सृजनकर्ता को त्याग करना पड़ता है। कभी–कभी तो यह स्थिति भी होती है कि बलिदान के पश्चात नवनिर्माण आकार पाता है।

ख. फ़िराक की गज़ल के प्रथम दो शेर प्रकृति वर्णन को ही समर्पित हैं। प्रथम शेर में कलियों के खिलने की प्रक्रिया का भावपूर्ण वर्णन है। कवि इस शेर को नव रसों से आरंभ करता है। हर कोमल गाँठ के खुल जाने में कलियों का खिलना और दूसरा प्रतीकात्मक अर्थ भी है कि सब बंधनों से मुक्त हो जाना, संबंध सुधर जाना। इसके बाद कवि कलियों के खिलने से रंगों और सुगंध के फैल जाने की बात करता है। पाठक के समक्ष एक बिंब उभरता है सौंदर्य और सुगंध दोनों को महसूस करता है।

ग. 'बादल राग' शीर्षक पढ़ते ही हमारे मन–मस्तिष्क में बादलों की गर्जन सुनाई देने लगती है।कवि ने बादलों के गर्जन–तर्जन को क्रांति अर्थात् रणभेरी कहा है। बादल के आगमन से प्राणियों और परिवेश में जो कोलाहल सुनाई देता है, जो परिवर्तन आते हैं, उन्हे वर्णित किया है। वर्णन इतना सशक्त और नादमय है कि कविता में आरंभ से अंत तक बादल का स्वर सुनाई देता रहता है। इन सभी विशेषताओं के कारण 'बादल राग' शीर्षक ही सबसे उपयुक्त है।

घ. किशोर और युवा अवस्था' एक ऐसी अवस्था है। जिसमें क्षमता और इच्छाशक्ति उ़फान पर होती है। ये स्वयं अपना लक्ष्य निर्धारित करते हैं और उसको पाने की हर संभव कोशिश करते है। इनकी नन्हीं आँखों में दूर गगन की ऊँचाइयों को पाने के सपने होते हैं। डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का कहना है–'वे बच्चों की आँखों में महाशक्ति भारत की नींव देखते हैं'। अतः हमें बच्चों से सलाह लेनी चाहिए, उनकी इच्छा से, उनकी क्षमता से लाभ उठाना चाहिए। बच्चे हमारा भविष्य उज्ज्वल बनाते हैं। देश की बागडोर भी बच्चों के हाथों में ;युवा वर्ग आ जाए, तो अनेक समस्याएँ समाप्त हो जाएँगी।

ड़. प्रस्तुत कविता का शीर्षक अपने–आप में कविता के सारांश को समेटे हुए है। शीर्षक पढ़कर लगता है मानो किसी पशु को पिंजरे में बंद करके रखा गया है और दर्शक उसे और उसकी गतिविधियाँ देखकर मनोरंजन करते रहे हैं। ठीक उसी भाव से यहाँ एक अपाहिज की किसी भी भाव अथवा मानवीय संवेदना का ध्यान किए बिना उसे एक मनोरंजक कार्यक्रम की भाँति प्रस्तुत किया जा रहा है। अतः 'कैमरे में बंद अपाहिज' एक सार्थक शीर्षक है।

च. 'कागज़ का एक पन्ना' और 'खेत' दोनों ही सृजन की भूमि हैं। इन दोनों के बिना कविता और कृषि–दोनों कर्म नहीं हो सकते। पन्ना कविता की सृजन भूमि और भावों–विचारों की अभिव्यक्ति का आधार है। कागज़ के बगैर शब्दों का लेखन ही संभव नहीं हो सकता। ठीक इसी प्रकार खेत के अभाव में बीज का रोपण भी संभव नहीं, अतः अंकुरण और पौधे का विकास, फल–फूल आदि भी नहीं हो सकेंगे। जैसे कृषक दिन–रात एक करके फसल तैयार

करता है, उसी प्रकार कवि का कर्म भी कोई आसान काम नहीं, वह भी कृषक की भाँति दिन–रात एक करके काव्य रचना करता है।

छ. 'कविता एक ओर जग–जीवन का भार लिए घूमने की बात करती है और दूसरी ओर मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूं' दोनों ही विपरीत कथन प्रतीत होते हैं। इन कथनों से यह आशय है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज से मनुष्य का नाता खट्टा–मीठा होता है। उसके जीवन में दुःख–सुख दोनों ही आते हैं। दुनिया अपने व्यंग्य–बाण और शासन–प्रशासन से मनुष्य को अनेक कष्टों के रूप में जीवन–भार प्रदान करती है। चाहकर भी मनुष्य इस जीवन भार से अलग नहीं हो सकता। इस जीवन भार को उसे आजीवन ढोना ही पड़ता है। लेकिन दूसरी ओर कवि का यह कहना है कि मैं जीवन इस जग को देकर नहीं जीता क्योंकि वह इसे हृदयहीन और स्वार्थी मानता है। वह तो केवल संसार के वैभव से अलग अपनी मस्ती में मस्त होकर जीवन जीना चाहता है। इसलिए वह कहता है कि मैं कभी भी जग का ध्यान नहीं करता।

ज. बच्चे अपने माता–पिता की आशा में नीड़ों से झॉक रहे होंगे। मॉ–बाप से बिछुड़कर बच्चे अपने–अपने घौंसलों में यही आशा मन में लिए रहते होंगे कि उनके माता–पिता लौटकर कब आएंगे ? कब उनकी मॉ उनको लाड़–प्यार करेगी ? कब उनको भोजन करा उनकी भूख शांत करेगी । इस प्रकार बच्चे अपने नीड़ों से ऐसी आशाऍं लेकर झॉक रहे होंगे।

झ. यह कविता प्राकृतिक सौंदर्य से ओत–प्रोत है। सबसे तेज़ बौछारें तथा भादों के जाने के बाद सबेरा हुआ जो अत्यंत लालिमा और सुंदरता से परिपूर्ण था। वह सवेरा खरगोश की ऑखों के समान लाल रंग का था। शरद ऋतु आर्थात उजाला अनेक बौछारों और झाड़ियों को चीरता हुआ आया है। कवि ने शरद ऋतु का मानवीकरण करते हुए कहा है कि शरद अपनी चमकीली साइकिल पर सवार होकर घंटी बजाता हुआ आया। उसने चमकीले संकेतों के द्वारा पतंग उड़ाने वाले बच्चों के समूह को अपने पास बुलाया। अपने चमकीले संकेतों और सौंदर्य से उसने आकाश को इतना मुलायम और सुंदर बना दिया जिसमें पतंग उड़ सके। जब बच्चे के रंग–बिरंगे पतंग आकाश में उड़ने लगे तो चारों ओर सीटियों और किलकारियों की आवाज गूंज उठी तथा तितलियों ने मधुर गुंजार शुरू कर दिया।

अ. कवि ने बच्चों के लिए ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि पतंग बच्चों की कोमल भावनाओं का प्रतीक है। पंतंग के साथ–साथ बच्चों का मन भी उड़ता रहता है। इसके साथ बच्चों का संबंध अटूट बन जाता है। जैसे–जैसे असीम आकाश में उड़ते पतंग जैसे–जैसे हिलोरे लेते हैं जैसे–जैसे बच्चों का मन भी हिलोरे लेता है। बच्चे पतंग के साथ इतने खे जाते हैं िकवे अपने–आपको ही भूल जाते हैं। उन्हें पतंग के अतिरिक्त कुछ भी नहीं दिखता।

ट. जब हम किसी को कोई बात कहना चाहते हैं तो उसके लिए हमें उन्हीं उचित शब्दों का चयन करना पड़ता है जिससे हमारी बात उस व्यक्ति तक स्पष्ट रूप से पहुँच जाए और वह हमारी बात कहने का मतलब भी समझ जाए नहीं तो कई बार सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है। जैसे हमने किसी को मारना नहीं है और हम कहते हैं 'मारो, मत छोड़ो' तो सुनने वाला उसे मार देगा। हमें कहना चाहिए था 'मारो मत, छोड़ो'। इस प्रकार से सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है।

ठ. 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में कवि ने शारीरिक रूप से दूर्बल व्यक्ति के प्रति करुणा भाव प्रकट किए हैं लेकिन टेलीविज़न कैमरा अपने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए तथा अपने करोबार के करण उस अपाहिज के प्रति संवेदनहीन रवैये को अपनाता है। कैमरे वाले दर्शकों को दिखाते हुए अपाहिज की संवेदनाओं को नहीं देखते। दूरदर्शन शारीरिक चुनौती झेलते लोगों के प्रति संवेदनशीलता की अपेक्षा संवेदनशीलता का रवैया अपनाता है जिस कारण अपाहिज लोगों के हृदय में क्रूर भाव पनप जाते हैं।

ड. इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने टेलीविज़न कैमरा तथा दूरदर्शन वालों पर व्यंग्य किया है जो अपने आपको हर तरह से समर्थ मानकर किसी अपाहिज व्यक्ति की संवेदनाओं से खिलवाड़ करते हैं। ये शारीरिक चुनौती झेलते लोगों की दुर्बलता का बार–बार अहसास कराकर उन्हें कुंठित करते हैं। जो अपनी प्रसिद्धि के लिए दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुँचाते हैं।

10. गद्यांश पर अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. सेवक–धर्म में हनुमान जी से स्पद्र्धा करने वाली भक्तिन किसी अंजना की पुत्री न होकर एक अनामधन्या गोपालिका की कन्या है – नाम है लछमिन अर्थात लक्ष्मी। पर जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्धि भक्ति के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी। वैसे तो जीवन में प्रायः सभी को अपने–अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है। पर भक्तिन बहुत समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धि–सूचक नाम किसी को बताती नहीं। केवल जब नौकरी की खोज में आई थी, तब ईमानदारी का परिचय देने के लिए उसने शेष इतिवृत्त के साथ यह भी बता दिया। पर इस प्रार्थना के साथ कि मैं कभी नाम का उपयोग न करूँ। उपनाम रखने की प्रतिभा होती, तो मैं सबसे पहले उसका प्रयोग अपने उपर करती, इस तथ्य को वह देहातिन क्या जाने, इसी से जब मैंने कंठी माला देखकर उसका नया नामकरण किया तब वह भक्तिन–जैसे कवित्वहीन नाम को पाकर भी गद्गद हो उठी।

क. प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है? इसके रचनाकार कौन हैं?
ख. भक्तिन अपना नाम किसी को क्यों नहीं बताती थी?
ग. भक्तिन को हनुमान जी से स्पद्र्धा करने वाली किस अर्थ में कहा गया है?
घ. महादेवी जी ने लक्ष्मी का नामकरण कैसे किया?
उत्तर :–

क. प्रस्तुत गद्यांश 'भक्तिन' पाठ से लिया गया है। इसे 'महादेवी वर्मा' ने लिखा है।

ख. भक्तिन का असली नाम लछमिन था। वह इस नाम को सबसे छिपाती थी, क्योंकि इस समृद्धि –सूचक नाम जैसा उसके जीवन में कुछ था ही नहीं। अतः उसे नाम पर शर्म महसूस होती होगी। इसीलिए वह किसी को अपना नाम नहीं बताती थी।

ग. हनुमान जी को सेवक–धर्म को सर्वाध्कि निष्ठा से निभानेवाला रामभक्त माना जाता है। महादेवी जी भक्तिन के सेवा भाव से इतनी प्रभावित थी कि उन्होंने इसी सद्‌गुण के कारण भक्तिन को हनुमान जी के समकक्ष माना।

घ. लक्ष्मी ने ईमानदारी से अपना नाम बताने और इस नाम को छिपाने की बात स्पष्ट रूप से बता दी थी। अतः उसकी कंठी–माला देखकर लेखिका ने उसे 'भक्तिन' नाम दे डाला।

2. पिता का उस पर अगाध प्रेम होने के कारण स्वभावतः ईर्ष्यालु और संपत्ति की रक्षा में सतर्क विमाता ने उनके मरणांतक रोग समाचार तब भेजा, जब वह मृत्यु की सूचना भी बन चुका था। रोने–पीटने के अपशकुन से बचने के लिए सास ने भी उसे कुछ न बताया। बहुत दिन से नैहर नहीं गई, सो जाकर देख आवे, यही कहकर और पहना–उढ़ाकर सास ने उसे विदा कर दिया। इस अप्रत्याशित अनुग्रह ने उसके पैरों में जो पंख लगा दिए थे, वे गाँव की सीमा में पहुँचते ही झड़ गए। 'हाय लछमिन अब आई' की अस्पष्ट पुनरावृत्तियाँ और स्पष्ट सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियाँ उसे घर तक ठेल ले गईं। पर वहाँ न पिता का चिह्न शेष था, न विमाता के व्यवहार में शिष्टाचार का लेश था। दुख से शिथिल और अपमान से जलती हुई वह उस घर में पानी भी बिना पिए उलटे पैरों ससुराल लौट पड़ी। सास को खरी–खोटी सुनाकर उसने विमाता पर आया हुआ क्रोध शांत किया और पति के ऊपर गहने फेंक–फेंक कर उसने पिता के चिर विछोह की मर्मव्यथा व्यक्त की।

क. प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है? इसके रचनाकार कौन है?
ख. भक्तिन को उसके पिता की बीमारी का समाचार क्यों नहीं दिया गया?
ग. लछमिन से भक्तिन की सास ने उससे पिता की मृत्यु का समाचार क्यों छिपाया?
घ. पिता के घर पहुँचकर भी लछमिन बिना पानी पिए उलटे पैरों क्यों लौट गई?
उत्तरः–

क. प्रस्तुत गद्यांश 'भक्तिन' पाठ से लिया गया है। इसे 'महादेवी वर्मा जी' ने लिखा है।

ख. भक्तिन के पिता उसे अगाध प्रेम करते थे। इसी कारण विमाता ईर्ष्या करती थी। उसे यह डर था कि भक्तिन आई तो कहीं उसके पिता अपनी संपत्ति उसके नाम न कर दें। इसी भय और द्वेष के कारण विमाता ने उसे पिता की बीमारी की सूचना नहीं दी।

ग. लछमिन की सास ने सोचा कि पिता की लाड़ली लछमिन बहुत रोना–धोना मचाएगी, इससे घर में अपशगुन का बखेड़ा फैलेगा। इसी झंझट से बचने के लिए उसने लछमिन को पिता की मृत्यु की सूचना नहीं दी।

घ. लछमिन तो उत्साह से भर कर पिता के घर आई थी। स्नेही पिता से मिलने की खुशी से उसका मन प्रफुल्लित था। लेकिन जैसे ही उसने जाना कि पिता की मृत्यु भी हो चुकी और

उसे सूचित भी नहीं किया गया, अन्यथा बीमार पिता से मिल तो लेती। विमाता की सारी चाल समझते ही दुख से शिथिल और अपमान से जलती हुई लछमिन पानी भी बिना पिए ही लौट गई।

3. उनका आशय था कि यह पत्नी की महिमा है। उस महिमा का मैं कायल हूँ। आदिकाल से इस विषय में पति से पत्नी की ही प्रमुखता प्रमाणित है। और यह व्यक्तित्व का प्रश्न नहीं, स्त्रीत्व का प्रश्न है। स्त्री माया न जोड़े, तो क्या मैं जोड़ूँ? फिर भी सच सब है और वह यह कि इस बात में पत्नी की ओट ली जाती है। मूल में एक और तत्त्व की महिमा सविशेष है। वह तत्त्व ही मनीबैग, अर्थात् पैसे की गरमी या एनर्जी।
पैसा पावर है। पर उसके सबूत में आस–पास माल–टाल न जमा हो तो क्या वह खाक पावर है। पैसे को देखने के लिए बैंक–हिसाब देखिए, पर माल–असबाब मकान–कोठी तो अनदेखे भी दीखते हैं। पैसे की उस 'पर्चेजिंग पावर' के प्रयोग में ही पावर का रस है।
लेकिन नहीं। लोग संयमी भी होते हैं। वे फिजूल सामान को फिजूल समझते हैं। वे पैसा बहाते नहीं हैं और बुद्धिमान होते हैं। बुद्धि और संयमपूर्वक वह पैसे को जोड़ते जाते हैं, जोड़ते जाते हैं। वह पैसे की पावर को इतना निश्चय समझते हैं, उसके प्रयोग की परीक्षा उन्हें दरकार नहीं है। बस खुद पैसे के जुड़ा होने पर उनका मन गर्व से भरा फूला रहता है।
क. प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है?इसके रचनाकार कौन हैं?
ख. लेखक के अनुसार पत्नी की महिमा का क्या कारण है?
ग. आपके अनुसार स्त्री की आड़ में किस सच को छिपाया जा रहा है?
घ. सामान्यतः संयमी व्यक्ति क्या करते हैं?
उत्तर :–
क. प्रस्तुत गद्यांश 'बाज़ार दर्शन' पाठ से लिया गया है, इसकी रचना जैनेंद्र जी ने की है।

ख. आदिकाल से ही स्त्री को महत्त्वपूर्ण माना गया है। स्त्री पत्नी ही महिमा है और इस महिमा का प्रशंसक है उसका पति। वही इसकी प्रमुखता को प्रमाणित कर रहा है।
ग. स्त्री की आड़ में यह सच छिपाया जा रहा है कि इन महाशय के पास भरा हुआ मनीबैग है, पैसे की गर्मी है, ये इस गर्मी से अपनी एनर्जी साबित करने के लिए स्त्री को फिजूल खर्च करने देते हैं।

घ. संयमी लोग 'पर्चेज़िंग पावर' के नाम अपनी शान नहीं दिखाते। वे धन को जोड़कर बुद्धि और संयम से अपनी पावर बनाते हैं। प्रसन्न रहते हैं और फ़िजूलखर्च नहीं करते।

4. मैंने मन में कहा, ठीक। बाज़ार आमंत्रित करता है कि आओ मुझे लूटो। सब भूल जाओ, मुझे देखो। मेरा रूप और किसके लिए है? मैं तुम्हारे लिए हूँ? मैं तुम्हारे लिए हूँ। नहीं कुछ चाहते हो, तो भी देखने में क्या हरज़ है। अजी आओ भी। इस आमंत्रण में यह खूबी है कि आग्रह नहीं है, आग्रह तिरस्कार जगाता है। लेकिन ऊँचे बाज़ार का आमंत्रण मूक होता है और उससे चाह जगती है। चाह मतलब अभाव। चौक बाज़ार में खड़े होकर आदमी को लगने लगता है कि उसके अपने पास काफ़ी नहीं और चाहिए, और चाहिए। मेरे यहाँ कितना परिमित है और यहाँ कितना अतुलित है ओह! कोई अपने को न जाने तो बाज़ार का यह

चौक उसे कामना से विकल बना छोड़े। विकल क्यों, पागल। असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल कर मनुष्य को सदा के लिए यह बेकार बना डाल सकता है।

क. प्रस्तुत गद्यांश के लेखक कौन हैं? इसे किस पाठ से लिया गया है?
ख. गद्यांश के आरंभ में कौन, किससे और क्या कह रहा है?
ग. चाह का मतलब अभाव क्यों कहा गया है?
घ. बाज़ार के चौक के बारे में क्या बताया गया है?

उत्तरः–

क. प्रस्तुत गद्यांश श्री जैनेंद्र ने लिखा है, इसे 'बाज़ार दर्शन' पाठ से लिया गया है।

ख. गद्यांश के आरंभ में बाज़ार ग्राहक से कह रहा है कि आओ मुझे लूटो। सब भूल जाओ, मुझे देखो। मेरा रूप और किसके लिए है? मैं तुम्हारे लिए हूँ।

ग. चाह का अर्थ है इच्छा, जो बाज़ार के मूक आमंत्रण से हमें अपनी ओर आकर्षित करती है और हम भीतर महसूस करके सोचते हैं कि आह! कितना अधिक है और मेरे यहाँ कितना कम है। इसलिए चाह अर्थात् अभाव।

घ. बाज़ार का चौक हमें विकल, पागल कर सकता है। असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल मनुष्य को सदा के लिए बेकार कर देता है।

5. इन बातों को आज पचास से...आखिर कब बदलेगी यह स्थिति?

क. पाठ तथा लेखक का नाम बताइए।
ख. कौन–सी बातें लेखक के मन को कचोटती हैं?
ग. भ्रष्टाचार के लिए जिम्मेदार कौन है? क्यों?
घ. 'पर गगरी फूटी की फूटी रह जाती है'।–आशय स्पष्ट करें।

उत्तरः–

क. पाठ– काले मेघा पानी दे। लेखक–धर्मवीर भारती
ख. लेखक सोचता है कि हमस ब देश के लिए क्या करते हैं?देश से अपेक्षा तो रखते हैं, परंतु उसके लिए त्याग करने को तैयार नहीं है। हमें बस अपने स्वार्थ की चिन्ता रहती है। ये सभी बातें लेखक के मन को कचोटती हैं।
ग. भ्रष्टाचार के लिए आम आदमी जिम्मेदार है।आज हर व्यक्ति भ्रष्ट आचरण की बात करता है, परंतु वह स्वयं उसी का हिस्सा बना हुआ है।कथनी और करनी में अंतर के कारण भ्रष्टाचार पनप रहा है।

6. रात्रि की विभीषिका को सिर्फ ....मृत्यु से वे डरते नहीं थे।

क. पाठ तथा लेखक का नाम बताइए।
ख. रात्रि में ढोलक की आवाज से गांववालों पर क्या असर पड़ता था?
ग. ढोलक की आवाज में क्या खास बात थी?
घ. पहलवान रात को क्या करता था?

उत्तरः–

क. पाठ–पहलवान की ढोलक। लेखक–फणीश्वरनाथ रेणु।

ख. ढोलक की आवाज गांववालों में जोश का संचार करती थी। वह उनके लिए संजीवनी शक्ति के समान थी। बूढ़े,बच्चों तथा जवानों की शक्तिहीन आंखों के आगे दंगल के दृश्य नाचने लगते थे।
ग. लेखक बताता है कि ढोलक की आवाज में न तो बुखार हटाने का गुण था और न महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति थी, परंतु यह मरते हुए प्राणियों में मृत्यु से न डरने का साहस पैदा करती थी।
घ. पहलवान संध्या से सुबह तक ढोल बजाता था। उसकी ढोलक की ललकार रात्रि की विभीषिका को चुनौती देती थी।

7. इसलिए भारत में चैप्लिन के.....................................कभी चार्ली का सान्निध्य चाहा था।
क. पाठ तथा लेखक का नाम बताइए।
ख. भारतीयों ने चैप्लिन को सहज भाव से क्यों अपनाया?
ग. लोग व्यक्ति को 'चार्ली' या 'जानी वाकर' क्यों कह देते हैं?
घ. गांधी और नेहरू का चैप्लिन से क्या संबंध है?
उत्तरः–
क. पाठ–चार्ली चैप्लिन यानी हम सब। लेखक–विष्णु खरे।
ख. चार्ली की रचनाओं में हास्य कब करूणा में बदल जाएगा तथा करूणा कब हास्य में बदल जाएगी,इस सिद्धांत को भारतीय जनता ने अपना लिया। विदेशी सिद्ध्धंत को सहज रूप में अपनाने की यह बात अनोखी है।
ग. भारत में हर व्यक्ति दूसरे को विदूषक कभी–न–कभी समझता है।इसी कारण लोग दूसरे व्यक्ति को परिस्थितियों के अनुसार चार्ली या जानी वाकर कह देते हैं।
घ. गांधी से चार्ली चैप्लिन का खासा पट था।गांधी तथा नेहरू–दोनो ने कभी चार्ली का साथ चाहा था।

8. उन सिख बीबी को देखकर सफिया...........................जिंदादिली की तसवीर।
क. पाठ तथा लेखिका का नाम बताइए।
ख. सिख बीबी की किन विशेषताओं को देखकर सफिया हैरान रह गई?
ग. घर की बहू ने सिख बीबी को क्या बताया?
घ. सिख बीबी ने लाहौर के बारे में क्या बताया?
उत्तरः–
क. पाठ–नमक। लेखिका–रजिया सज्जाद ज़हीर।
ख. सफिया ने सिख बीबी में अपनी मॉ का रूप देखा।वह भारी भरकम जिस्म की थीं।उनकी ऑखें छोटी–छोटी तथा चमकदार थीं। वे सफेद बारीक मलमल का दुपट्टा ओढ़े हुए थीं।
ग. घर की बहू ने सिख बीबी को बताया कि सफिया मुसलमान है तथा कल ही यह अपने भाइयों से मिलने लाहौर जा रही है।
घ. जब सिख बीबी को पता चला कि सफिया लाहौर जा रही है तो वे उसके पास आ बैठीं तथा उसे लाहौर के बारे में बताया कि वह बहुत प्यारा शहर है। वहॉ के लोग खूबसूरत, बढ़िया खाने, गहनों कपड़ों के शौकीन तथा दरियादिल होते हैं।

9. शिरीष तरु सचमुच पक्के अवधूत..वह अवधूत आज कहॉ है।

क. पाठ तथा लेखक का नाम बताइए।

ख. लेखक ने देश की किस दशा के बारे में बताया है?

ग. 'अपने देश में एक बूढ़ा रह सका था'—यहॉ एक बूढ़ा कौन है?लेखक ने उसकी क्या विशेषता बताई है?

घ. शिरीष की तुलना किससे की गई है?लेखक के मन में क्या बात उठती है?

उत्तरः—

क. पाठ—शिरीष के फूल। लेखक—हजारी प्रसाद द्विवेदी।

ख. लेखक ने बताया है कि इस देश में मारकाट, अग्निदाह, लूटपाट आदि का जोर है। सारे देश में अव्यवस्था फैली हुई है।

ग. यहॉ 'एक बूढ़ा' गाांधी है। लेखक ने बताया है कि अच्यचस्था के बीच भी गांधी जी ने देश का नेतृत्व किया।

घ. शिरीष की तुलना अवधूत से की गई है।लेखक के मन में एक बात उठती है कि आज समाज में अनासक्त व्यक्तियों की कमी है।

10. मेरा आदर्श समाज, स्वतंत्रता..इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है।

क. लेखक ने किन विशेषताओं को आदर्श समाज की धुरी माना है और क्यों?

ख. भ्रातृता के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

ग. 'अबाध संपर्क' से लेखक का क्या अभिप्राय है?

घ. लोकतंत्र का वास्तविक स्वरूप किसे कहा गया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः—

क. लेखक उस समाज को आदर्श मानते हैं, जहॉ समानता, स्वतंत्रता व भाईचारा हो।ये आदर्श समाज की धुरी है,क्योंकि इनसे समाज में गतिशीलता आती है।

ख. लेखक के अनुसार भ्रतृता का अर्थ है —भाईचारा। लेखक ऐसा भाईचारा चाहते हैं, जिसमें कोई बाधा न हो।

ग. 'अबाध संपर्क' का अर्थ है — बिना किसी बाधा के संपर्क।इन संपर्कों में बंधन, जड़ता या रूढ़िबद्धता नहीं होनी चाहिए।

घ. लोकतंत्र का वास्तिविक स्वरूप भाईचारा है। यह सामूहिक जीवन जीने का ढंग है।

11. गद्यांश की विषय वस्तु पर प्रश्न

क. यदि आप धर्मवीर भारती के स्थान पर होते तो जीजी के तर्क सुनकर क्या करते और क्यों? 'काले मेघा पानी दे' — पाठ के आधार पर बताइए।

ख. 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर बताइए कि लुट्टन सिंह ढोल को अपना गुरु क्यों मानता था?

ग. चार्ली चैप्लिन की जिन्दगी ने उन्हें कैसा बना दिया? 'चार्ली चैप्लिन यानी हम सब' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

घ. लाहौर और अमृतसर के कस्टम अधिकारियों ने स़फिया के साथ कैसा व्यवहार किया? 'नमक' पाठ के आधार पर बताइए।

ड़. कालिदास ने शिरीष की कोमलता और द्विवेदी जी ने उसकी कठोरता के विषय में क्या कहा है? 'शिरीष के फूल' पाठ के आधार पर बताइए।

च. 'काले मेघा पानी दे' पाठ के आधार पर जल और वर्षा के अभाव में गाँव की दशा का वर्णन कीजिए।
छ. 'ढोल मे तो जैसे पहलवान की जान बसी थी।' – 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर इसे सिद्ध कीजिए।
ज. चार्ली चैप्लिन ने दर्शकों की वर्ग तथा वर्ण–व्यवस्था को कैसे तोड़ा है?– 'चार्ली चैप्लिन यानी हम सब' पाठ के आधार पर बताइए।
झ. सिख बीबी के प्रति सफिया के आकर्षण का क्या कारण था? 'नमक' पाठ के आधार पर बताइए।
अ. शिरीष तरु के अवधूत रूप के कारण लेखक को किस महात्मा की याद आती है और क्यों? 'शिरीष वेफ फूल' पाठ के आधार पर बताइए।
ट. भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गई?
ठ. बाजार के जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या–क्या असर पड़ता है?
ड. लेखक क`मत से दासता की व्यापक परिभाषा क्या है?
ढ. 'बाज़ारूपन' से क्या तात्पर्य है ? किस प्रकार के व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं अथवा बाज़ार की सार्थकता किस में है।

उत्तर :–

क. यदि हम लेखक के स्थान पर होते तो जीजी के तर्क सुनकर वही करते जो लेखक ने किया, क्योंकि तर्क करने से तो जीजी शायद ही कुछ समझ पातीं, उनका दिल दुखता और हमारे प्रति उनका सद्भाव भी घट जाता। लेखक की भाँति हम भी जीजी के प्यार और सद्भाव को खोना नहीं चाहते। यही कारण है कि बहुत–सी बेतुकी परंपराएँ हमारे देश को जकड़े हुए हैं।

ख. ढोल को पहलवान ने अपना गुरु माना और एकलव्य की भांति हमेशा उसी की आज्ञा का अनुकरण करता रहा। ढोल को ही उसने अपने बेटों का गुरु बनाकर शिक्षा दी कि सदा इसको मान देना। ढोल लेकर ही वह राज–दरबार से रुखसत हुआ। ढोल बजा–बजा कर ही उसने अपने अखाड़े में बच्चों–लड़कों को शिक्षा दी, कुश्ती के गुर सिखाए। ढोल से ही उसने गाँववालों को भीषण दुख में भी संजीवनी शक्ति प्रदान की थी। ढोल के सहारे ही बेटों की मृत्यु का दुख पाँच दिन तक दिलेरी से सहन किया। और अंत में वह भी मर गया। यह सब देखकर लगता है कि उसका ढोल उसके जीवन का संबल, जीवन साथी ही था।

ग. चार्ली एक परित्यक्ता, दूसरे दर्जे की स्टेज अभिनेत्री के बेटे थे। उन्होने भयंकर गरीबी और माँ के पागलपन से संघर्ष करना सीखा। साम्राज्य, औद्योगिक क्रांति, पूँजीवाद तथा सामंतशाही से मगरूर एक समाज का तिरस्कार सहन किया। इसी कारण मासूम चैप्लिन को जो जीवन मूल्य मिले, वे करोड़पति हो जाने के बाद भी अंत तक उनमें रहे। इन परिस्थितियों ने चैप्लिन में भीड़ का वह बच्चा सदा जीवित रखा, जो इशारे से बतला देता है कि राजा भी उतना ही नंगा है, जितना मैं हूँ और हँस देता है। यही वह कलाकार है, जिसने विषम परिस्थितियों में भी हिम्मत से काम लिया।

घ. दोनों जगह के कस्टम अधिकारियों ने स़फिया और उसकी नमक रूपी सद्भावना का सम्मान किया। केवल सम्मान नहीं, उसे यह भी जानकारी मिली कि उनमें से एक देहली को अपना वतन मानते और दूसरे ढाका को अपना वतन कहते है। उन दोनों ने स़फिया के प्रति पूरा सद्भाव दिखाया, कानून का उल्लंघन करके भी उसे नमक ले जाने दिया। अमृतसर वाले सुनील दास गुप्त तो उसका थैला उठाकर चले और उसके पुल पार करने तक वहीं पर खड़े रहे। उन अधिकारियों ने यह साबित कर दिया कि कोई भी कानून या सरहद प्रेम से ऊपर नहींहै।

ङ़. कालिदास और संस्कृत साहित्य ने शिरीष को बहुत कोमल माना है। कालिदास का कथन कि''पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीष पुष्पं न पुनः पतत्रिणाम्'' – शिरीष पुष्प केवल भौरों के पदों का कोमल दबाव सहन कर सकता है, पक्षियों का बिलकुल नहीं। लेकिन इससे हजारी प्रसाद द्विवेदी सहमत नहीं हैं। उनका विचार है कि इसे कोमल मानना भूल है। इसके फल इतने मज़बूत होते है कि नए फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते। जब तक नए फल–पत्ते मिलकर, धकियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते, तब तक वे डटे रहते हैं। वसंत के आगमन पर जब सारी वनस्थली पुष्प–पत्र से मर्मरित होती रहती है, तब भी शिरिष के पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ाते रहते हैं।

च. गली–मुहल्ला, गाँव–शहर हर जगह लोग गरमी से भुन–भुन कर त्राहिमाम–त्राहिमाम कर रहे थे। जेठ मास भी अपना ताप फैलाकर जा चुका था और अब तो आषाढ़ के भी पंद्रह दिन बीत चुके थे। कुएँ सूखने लगे थे, नलों में पानी नहीं आता था। खेत की माटी सूख–सूख कर पत्थर हो गई थी। पपड़ी पड़ कर अब खेतों में दरारें पड़ गई थीं। झुलसा देनेवाली लू चलती थी। ढोर–ढंगर प्यास से मर रहे थे, पर प्यास बुझाने के लिए पानी नहीं था। निरुपाय से ग्रामीण पूजा पाठ में लगे थे। अंत में इंदर सेना भी निकल पड़ी थी।

छ. लुट्टन सिंह जब जवानी के जोश में आकर चाँद सिंह नामक मँजे हुए पहलवान को ललकार बैठा, तो सारा जन समूह, राजा और पहलवानों का समूह आदि की यह धारणा थी कि यह कच्चा किशोर जिसने कुश्ती कभी सीखी नहीं है, पहले दाँव में ही ढेर हो जाएगा। लुट्टन सिंह की नसों में बिजली और मन में जीत का जज़्बा उबाल खा रहा था। उसे किसी की परवाह न थी। हाँ, ढोल की थाप में उसे एक–एक दाँव–पेंच का मार्गदर्शन जरूर मिल रहा था। उसी थाप का अनुसरण करते हुए उसने 'शेर के बच्चे' को खूब धोया, उठा–उठा कर पटका और हरा दिया। जीत के लिए सारी दुनिया विरोध में और मात्रा ढोल ही उसके साथ था। अतः जीतकर वह सबसे पहले ढोल के पास दौड़ा, उसे प्रणाम किया।

ज. चार्ली की फिल्में बच्चे–बूढ़े, जवान, वयस्कों सभी में समान रूप से लोकप्रिय हैं। यह चैप्लिन का चमत्कार ही है कि उनकी फ़िल्मों को पागलखाने के मरीज़ों, विकल मस्तिष्क लोगों से लेकर आइंस्टाइन जैसे महान प्रतिभावाले व्यक्ति तक एक स्तर पर कहीं अध्कि सूक्ष्म रसास्वाद के साथ देख सकते हैं। इसलिए ऐसा कहा जाता है कि हर वर्ग में लोकप्रिय इस कलाकार ने फ़िल्म कला को लोकतांत्रिक बनाया और दर्शकों की वर्ग तथा वर्ण व्यवस्था का तोड़ा। कहीं–कहीं तो भौगोलिक सीमा, भाषा आदि के बंधनों को भी पार करने के कारण इन्हें सार्वभौमिक कलाकार कहा गया है।

झ. जब सफिया ने सिख बीबी को देखा, तो वह हैरान रह गई। बीबी का वही चेहरा था, जैसा सफ़िया की माँ का था। बिलकुल वही कद, वही भारी शरीर, वही छोटी–छोटी चमकदार आँखें, जिनमें नेकी, मुहब्बत और रहमदिली की रोशनी जगमगा रही थी। चेहरा खुली किताब जैसा था। बीबी ने वैसी ही सफ़ेद मलमल का दुपट्टा ओढ़ रखा था, जैसा सफ़िया की अम्मा मुहर्रम में ओढ़ा करती थीं, इसीलिए सफ़िया बीबी की तरफ बार–बार बड़े प्यार से देखने लगी उसकी माँ तो बरसों पहले मर चुकी थीं, पर यह कौन? उसकी माँ जैसी है, इतनी समानता कैसे है? यही सोचकर सफ़िया उनके प्रति आकर्षित हुई।

ञ. शिरीष के अवधूत रूप के कारण लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी को हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की याद आती है। शिरीष तरु अवधूत है, क्योंकि वह बाह्य परिवर्तन–धूप, वर्षा, आँधि, लू सब में शांत बना रहता है और पुष्पित पल्लवित होता रहता है। इसी प्रकार महात्मा गाँधी भी मार–काट, अग्निदाह, लूट–पाट, खून–खच्चर के बवंडर के बीच स्थिर रह सके थे। इस समानता के कारण लेखक की गांधी जी की याद आ जाती है, जिनके व्यक्तित्व ने समाज को सिखाया कि आत्म बल, शारीरिक बल से कहीं ऊपर की चीज़ है। आत्मा की शक्ति है। जैसे शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल, इतना कठोर हो सका है, वैसे ही महात्मा गाँधी भी कठोर–कोमल व्यक्तित्ववाले थे। यह वृक्ष और वह मनुष्य दोनों ही अवधूत हैं।

ट. भक्तिन गॉव में रहती थी।वह अपने व्यवहार को नहीं बदल पाई थी, परंतु वह दूसरों को अपने मन के अनुसार बना लेना चाहती थीं। उसके क्रियाकलापों का असर लेखिका पर पड़ने लगा था। लेखिका ने गॉव के लगभग सभी संस्कार व क्रियाकलाप अपना लिए थे। वह भक्तिन से सब कुछ जान लेती थी। भक्तिन ने मकई का रात को बना दलिया, सवेरे मट्ठे के साथ, बाजरे के तिल लगे हुए पुए, ज्वार के भुने हुए भुट्टे के हरे दाने की खिचड़ी,महुए की लपसी खिलाकर और उनके गुणगान करके लेखिका को देहाती बना दिया था।

ठ. बाजार के जादू चढ़ने से मनुष्य पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ते हैं–

–मनुष्य फिजूलखर्ची करता है।
–वह गैर जरूरत का सामान ख्रीदता है।
–वह विवके खो बैठता है।

बाजार के जादू के उतरने से मनुष्य पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ते हैं–

–उसका बजट बिगड़ जाता है।
–अब वह केवल जरूरत का सामान खरीदता है।
–बाजार की चकाचौंध की निस्सारता समझ जाता है।

ड. लेखक दासता के विषय में कहता है कि दासता केवल कानूनी पराधीनता ही नहीं है। वस्तुतः दासता वह है जिसमें कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार तथा कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है।यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जाती है।

ढ. बाज़ारूपन से तात्पर्य कपट बढ़ाने से है अर्थात् सद्भाव की कमी। सद्भाव की कमी के कारण आदमी परस्पर भाई, मित्र और पड़ोसी आदि को भूल जाता है। मनुष्य केवल सब के साथ कोरे ग्राहक जैसा व्यवहार करता है। उसे कोई भाई मित्र या पड़ोसी दिखाई नहीं देता है। बाज़ारूपन के कारण मनुश्य को केवल अपना लाभ–हानि ही दिखाई देता है। इस भावना से शोषण भी होने लगता है।

जो व्यक्ति ये जानते हैं कि वे क्या चाहते हैं उन्हें किस वस्तु की आवश्यकता है ऐसे व्यक्ति ही बाज़ार को सार्थकता प्रदान कर सकते हैं। ये लोग कभी भी 'पर्चेजिंग पावर' के गर्व में नहीं डूबते। इन्हीं लोगों को अपनी चाहत का अहसास होता है जिसके आधार पर किए बाज़ार को सार्थकता प्रदान होती है।

<u>आरोह गद्य भाग पर अभ्यास प्रश्नः–</u>

क. भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेख्कि ने दिया है?
ख. बाजारूपन से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं अथवा बाजार की सार्थकता किसमें है?
ग. लोगों ने लड़कों की टोली को मेंझक मंडली नाम किस आधार पर दिया? यह टोली अपने आपको इंदर सेना कहकर क्यों बुलाती थी?
घ. 'गगरी फूटी बैल पियासा' इंदर सेना के इस खेलगीत में बैलों के प्यासा रहने की बात क्यों मुखरित हुई है?
ड़. कहानी के किस–किस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्या–क्या परिवर्तन आए?
च. लेखक ने चार्ली का भारतीयकरण किसे कहा और क्यों?गांधी और नेहरू ने भी उनका सान्निध्य क्यों चाहा?
छ. चार्ली सबसे ज्यादा स्वयं पर कब हॅसता है?
ज. सफिया के भाई ने नमक की पुड़िया ले जाने से क्यों मना कर दिया?
झ. नमक की पुड़िया ले जाने के संबंध में सफिया के मन में क्या द्वंद्व था?
अ. लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत की तरह क्यों माना है?
ट. द्विवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन स्थितियों में अविचल रहकर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है।.....स्पष्ट करें।
ठ. जाति प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे अम्बेडकर के क्या तर्क हैं?

12. वितान पर आधारित वस्तुपरक प्रश्न

क. यशोधर बाबू की पत्नी मुख्यतः पुराने संस्कारों वाली थी, फिर किन कारणों से वह आधुनिक बन गई? 'सिल्वर वैडिंग' पाठ के आधार पर बताइए।
ख. पाँचवी कक्षा में पास न होने के पश्चात लेखक को कैसा लगा? 'जूझ' कहानी के आधार पर लिखिए?
ग. ऐन की डायरी के माध्यम से हमारा मन सभी युद्ध पीड़ितों के लिए कैसा अनुभव करता

है? 'डायरी के पन्ने' कहानी के आधार पर बताइए।
घ. यशोधर बाबू का अपने बच्चों के साथ कैसा व्यवहार था? 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर बताइए।
ड़. किस घटना से पता चलता है कि लेखक की माँ उसके मन की पीड़ा समझ रही थी? 'जूझ' कहानी के आधार पर बताइए।
च. ऐन की डायरी से उसकी किशोरावस्था के बारे में क्या पता चलता है? 'डायरी के पन्ने' कहानी के आधार पर लिखिए।

उत्तर :–
क. यद्यपि यशोधर बाबू की पत्नी अपने मूल संस्कारों से किसी भी तरह आधुनिक नहीं है, पर अब बच्चों का पक्ष लेने की मातृ सुलभ मजबूरी ने उन्हें आधुनिक बना दिया है। वे बच्चों के साथ खुशी से समय बिताना चाहती हैं। यशोधर बाबू का समय तो दफ़्तर में कट जाता है, लेकिन उनकी पत्नी क्या करे? अतः बच्चों का साथ देना ही उन्हें अच्छा लगता है। इसके अतिरिक्त उनके मन में इस बात का भी बड़ा मलाल था कि जब वे शादी होकर आई थीं, तो संयुक्त परिवार में उन पर बहुत कुछ थोपा गया और उनके पति यशोधर बाबू ने कभी भी उनका पक्ष नहीं लिया। युवावस्था में ही उन्हें बुढ़िया बना दिया गया। अब तो कम–से–कम बच्चों के साथ रहकर कुछ मन की कर लें।

ख. जो लड़के चौथी पास करके कक्षा में आए, लेखक उनमें से गली के दो लड़कों के सिवाए और किसी को जानता तक नहीं था। जिन लड़कों को वह कम अक्ल और अपने से छोटा समझता था, उन्हीं के साथ अब उसे बैठना पड़ रहा था। वह अपनी कक्षा में पुराना विद्यार्थी होकर भी अजनबी बनकर रह गया। पुराने सहपाठी तो उसे सब तरह से जानते समझते थेः मगर नए लड़कों ने तो उसकी धोती, उसका गमछा, उसका थैला आदि सब चीज़ों का मज़ाक उड़ाना आरंभ कर दिया। उसके मन में यह दुख भी था कि इतनी कोशिश करके पढ़ने का अवसर मिला और वह पास नहीं हो सका। इससे उसके आत्मविश्वास में भी कमी आ गई।

ग. ऐन की डायरी में युद्ध पीड़ितों की ऐसी सूक्ष्म पीड़ाओं का सच्चा वर्णन है जैसा अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। इससे पीड़ितों के प्रति हमारा मन करुणा और दया से भर जाता है। मन में हिंसा और युद्ध के प्रति घृणा का भाव आता है। हम सोचते हैं कि युद्ध, विजेता और पराजित पक्ष दोनों के लिए ही आघात और पीड़ा देनेवाला होता है। जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के लिए भी नागरिकों के नन्हें बच्चों को कितना भटकना पड़ता है, यह पीड़ा की पराकाष्ठा है। यदि ऐन के साथ ऐसा बुरा व्यवहार न हुआ होता तो उसकी इस तरह अकाल मृत्यु न हुई होती। ऐन के परिवार के साथ जैसा हुआ वैसा न जाने कितने लोगों के साथ हुआ होगा। मन करता है कि वे लोग जो युद्ध का कारण बनते हैं वे ऐन की डायरी पढ़कर उसे अपने लिए अनुभव करके देखें।

घ. यशोधर बाबू डेमोक्रेट बाबू थे। वे हरगिज़ यह दुराग्रह नहीं करना चाहते थे कि बच्चे उनके कहे को पत्थर की लकीर मानें। अतः बच्चों को अपनी इच्छा से काम करने की पूरी आज़ादी थी। यशोधर बाबू तो यह भी मानते थे कि आज बच्चों को उनसे कहीं ज़्यादा ज्ञान है। मगर एक्सपीरिएंस का कोई सब्सटीट्यूट नहीं होता। अतः वे सिर्फ इतना भर चाहते थे

कि बच्चे जो कुछ भी करें, उनसे पूछ ज़रूर लें। इस तरह हम यह कह सकते हैं कि वे स्वयं चाहे जितने पुराणपंथी थे, बच्चों को स्वतंत्रा जीवन जीने देते थे।

ड़. लेखक पढ़ना चाहता था और उसके पिता उसे पढ़ाने के बजाए उससे खेत का काम, पशु चराने का काम कराना चाहते थे। पिता ने अपनी इच्छा को ध्यान में रखकर ही लेखक की पढ़ाई छुड़वा दी थी। इसी बात से लेखक बहुत ही परेशान रहता था। उसका मन दिन–रात अपनी पढ़ाई जारी रखने की योजनाएँ बनाता रहता था। इसी योजना के अनुसार लेखक ने अपनी माँ से दत्ता जी राव सरकार के घर चलकर उनकी मदद से अपने पिता को राजी करने की बात कही। माँ ने लेखक का साथ देने की बात को तुरंत स्वीकार कर लिया। अपने बेटे की पढ़ाई के बारे में वह दत्ता जी राव से जाकर बात भी करती है और पति से इस बात को छिपाने का आग्रह भी करती है। इससे स्पष्ट होता है कि वह लेखक के मऩ की पीड़ा को समझाती थी।

च. ऐन की डायरी किशोर मन की ईमानदार अभिव्यक्ति है। इससे पता लगता है कि किशोरों को अपनी चिट्ठियों और उपहारों से अधिक लगाव होता है। वे जो कुछ भी करना चाहते हैं उसे बड़े लोग नकारते रहते हैं, जैसे ऐन का केश–विन्यास जो फिल्मी सितारों की नकल करके करके बनाया जाता था। इस अवस्था में बड़ों द्वारा बात–बात पर कमी निकाली जाती है या किशोरों को टोका जाता है। यह बात किशोरों को बहुत ही नागवार गुज़रती है। किशोर बड़ों की अपेक्षा अधिक ईमानदारी से जीते हैं। इन्हें जीने के लिए सुंदर, स्वस्थ वातावरण चाहिए। किशोरावस्था में ऐन की भांति हम सभी अपेक्षाकृत अधिक संवेदनशील हो जाते हैं।

13. वितान पर लघुउत्तरीय प्रश्न

क. सिंधु–सभ्यता में नगर–नियोजन से भी कहीं ज्यादा सौंदर्य–बोध के दर्शन होते हैं। 'अतीत में दबे पाँव' पाठ में दिए तथ्यों के आधार पर जानकारी दीजिए।
ख. 'जूझ' कहानी के माध्यम से लेखक ने क्या सीख दी है?
ग. यशोधर बाबू का व्यवहार आपको कैसा लगा?'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर बताइए।
घ. सिंधु–सभ्यता साध्न–संपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
ड़. 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के माध्यम से लेखक ने क्या संदेश देने का प्रयास किया है?
च. लेखक का पाठशाला में विश्वास कैसे बढ़ा? 'जूझ' कहानी के आधार पर बताइए।

उत्तर :–

क. कहा जा सकता है कि खुदाई में प्राप्त धातु और पत्थर की मूर्तियों, मृद–भांड, उन पर चित्रित मनुष्य, वनस्पति और पशु–पक्षियों की छवियाँ, सुंदर मुहरें, उन पर बारीकी से उत्कीर्ण आकृतियाँ, खिलौने, केश–विन्यास और आभूषण आदि उस समय के लोगों के सौंदर्य–बोध के परिचायक हैं। इस सबसे कहीं ज्यादा सौंदर्य–बोध कराती हैं वहाँ की सुघड़ लिपि। यदि गहराई से सोचें तो वहाँ की प्रत्येक सुघड़ योजना भी तो सौंदर्य–बोध का ही एक प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। ढकी हुई पक्की नालियाँ बनाने के पीछे गंदगी से बचाव का जो उद्देश्य

था वह भी तो मूल रूप से स्वच्छता और सौंदर्य का ही बोध कराता है। आवास की सुंदर व्यवस्था हो या अन्न भंडारण, सभी के पीछे अप्रत्यक्ष रूप से सौंदर्य–बोध काम कर रहा है। अतः यह स्पष्ट है कि सिंधु सभ्यता में किसी भी अन्य व्यवस्था से ऊपर सौंदर्य–बोध ही था।

ख. हमारा लेखक प्रतिभा संपन्न था, मगर ढोर चराने और खेत में पानी देने तथा उपले बनाने में अपनी सारी शक्ति लगा रहा था। पढ़ने की इच्छा भीतर–ही–भीतर कुलबुलाती रहती थी। सभी उसे छोरे कहकर बुलाते। वह पशुओं का–सा जीवन जी रहा था।
जब पढ़ने का अवसर मिला, तो उसने कविता पाठ में से सबको पीछे छोड़ दिया। गणित के सवाल हल करने में भी उसने पूरी कक्षा को पीछे छोड़ दिया। सभी अध्यापक उसे आनंद कहकर पुकारते थे, उसे मानो अपनी स्वयं की पहचान मिल गई। उसके लगा उसे पंख निकल आए हैं। वह वह बहुत ही खुश रहने लगा।
मनुष्य के जीवन में शिक्षा का बहुत महत्त्व है। शिक्षा के अभाव में मनुष्य पशु के समान होता है। इस कहानी के कहानी के माध्यम से लेखक ने यही सीख दी है।

ग. इस पार्टी में यशोधर बाबू का व्यवहार बड़ा अजीब लगा। उन्हें पार्टी इंप्रापर लगी, क्योंकि उनके अनुसार ये सब अंग्रेज़ों के चोचले थे। अपनी पत्नी और पुत्री की ड्रेस इंप्रापर लगी, व्हिस्की इंप्रापर लगी, केक भी नहीं खाया, क्योंकि उसमें अंडा होता है। लड्डू भी नहीं खाया, क्योंकि शाम की पूजा नहीं की थी। पूजा में जाकर बैठ गए ताकि मेहमान चले जाएँ। उनका ऐसा व्यवहार बड़ा ही इंप्रापर लग रहा था। यदि वे कहीं किसी जगह पर भी ज़रा–सा समझौता कर लेते, तो शायद इतना बुरा न लगता।

घ. सिंधु–सभ्यता के शहर मोहनजोदड़ों की व्यवस्था, साधन और नियोजन के विषय में खूब चर्चा हुई है। इस बात से सभी प्रभावित हैं कि वहाँ की अन्न भंडारण व्यवस्था, जल निकासी की व्यवस्था अत्यंत विकसित और परिपक्व थी। हर निर्माण बड़ी बुद्धिमानी के साथ किया गया था यह सोचकर कि यदि सिंधु का जल बस्ती तक फैल भी जाए तो कम–से–कम नुकसान हो। इन सारी व्यवस्थाओं के बीच इस सभ्यता की संपन्नता की बात बहुत ही कम हुई है। वस्तुतः इनमें भव्यता का आडंबर है ही नहीं। व्यापारिक व्यवस्थाओं की जानकारी मिलती है, मगर सब कुछ आवश्यकताओं से ही जुड़ा हुआ है, भव्यता का प्रदर्शन कहीं नहीं मिलता। संभवतः वहाँ की लिपि पढ़ ली जाने के बाद इस विषय में अधिक जानकारी मिले।

ङ. इस कहानी में 'पीढ़ी का अंतराल' सबसे प्रमुख है। यही मूल संवेदना है क्योंकि कहानी में प्रत्येक कठिनाई इसलिए आ रही है कि यशोधर बाबू अपने पुराने संस्कारों, नियमों व कायदों से बंधे रहना चाहते हैं और उनका परिवार, उनके बच्चे वर्तमान में जी रहे हैं जो ऐसा कुछ गलत भी नहीं है। यदि यशोधर बाबू थोड़े–से लचीले स्वभाव के हो जाते, तो उन्हें बहुत सुख मिलता और जीवन भी खुशी से व्यतीत करते।

च. जब लेखक को वसंत पाटिल के साथ दूसरे लड़कों के सवाल जाँचने का काम मिला, तब उसकी वसंत से दोस्ती हो गई। अब ये दोनों एक–दूसरे की सहायता से कक्षा के अनेक काम निपटाने लगे। सभी अध्यापक लेखक को 'आनंदा' कहकर बुलाने लगे। यह संबोधन भी उसके लिए बड़ा महत्त्वपूर्ण था। मानो पाठशाला में आने के कारण ही उसे स्वयं का नाम सुनने को मिला। 'आनंदा' की कोई पहचान बनी। एक तो वसंत की दोस्ती, दूसरा अध्यापकों

का व्यवहार – इस कारण लेखक का अपनी पाठशाला में विश्वास बढ़ने लगा।

14. वितान पर निबंधात्मक प्रश्न

क. 'डायरी के पन्ने' पाठ के आधार पर ऐन द्वारा वर्णित सेंधमारों वाली घटना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
ख. 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर सिंधु–सभ्यता में प्राप्त वस्तुओं का वर्णन कीजिए।
ग. 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।
घ. 'डायरी के पन्ने' पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि ऐन फ्रैंक बहुत प्रतिभाशाली तथा परिपक्व थी?

उत्तर :–

क. ऐन ने अपनी डायरी में अनेक कष्ट देने वाली बातों में सबसे प्रमुख अज्ञातवास को ही कहा है। किसी बस्ती में छिपकर रहना बड़ा ही कठिन काम है। 11 अप्रैल 1944 की जो घटना ऐन ने लिखी है उससे पता चलता है कि वे लोग अनेक कष्टदायी स्थितियों के साथ–साथ सेंधमारों से भी संघर्ष करते थे।उस दिन रात साढ़े नौ बजे पीटर ने जिस प्रकार ऐन के पिता को बाहर बुलाया उससे ऐन समझ गई कि दाल में कुछ काला है। सेंधमारों ने अपना काम शुरू कर दिया था। इसलिए ऐन के पिता, मिस्टर वान दान और पीटर लपककर नीचे पहुँचे। ऐन, मार्गोट उनकी माँ और मिसेज वान डी ऊपर डरे–सहमे से इंतज़ार करते रहे। एक ज़ोर के धमाके की आवाज़ से इन लोगों के होश उड़ गए। नीचे गोदाम में सन्नाटा था और पुरुष लोग वहीं सेंधमारों के साथ संघर्ष कर रहे थे। डर से काँपने पर भी ये लोग शांत बने रहे। तकरीबन 15 मिनट बाद ऐन के पिता सहमे हुए ऊपर आए और इन लोगों से बत्तियाँ बंद करके ऊपर छत पर चले जाने को कहा। अब ये लोग डरने की प्रतिक्रिया जताने की स्थिति में भी नहीं थे। सीढ़ियों के बीच वाले दरवाज़े पर ताला जड़ दिया गया। बुक केस बंद कर दिया गया, नाइट लैंप पर स्वेटर डाल दिया गया। पीटर अभी सीढ़ियों पर ही था कि ज़ोर के दो धमाके सुनाई दिए। उसने नीचे जाकर देखा कि गोदाम की तरफ का आध भाग गायब था। वह लपककर होम गार्ड को चौकन्ना करने भागा। मिस्टर वान ने समझदारी दिखाते हुए शोर मचाया 'पुलिस! पुलिस' यह सुनकर सेंधमार भाग गए और गोदाम के फट्टे फिर से लगा दिए गए। लेकिन वे कुछ ही मिनट में लौट आए और फिर से तोड़ा–फोड़ी शुरू हो गई। उस डरावनी रात में बड़ी मुश्किल से पुरुषों ने संघर्ष करके जान बचाई।

ख. सिंधु–सभ्यता की खुदाई में मिली अनेक वस्तुओं को अजायबघर में रखा गया है। स्थानीय अजायबघर में बहुत कम वस्तुओं को रखा गया है। अधिकांश महत्त्वपूर्ण चीज़ें कराची, लाहौर, दिल्ली और लंदन में हैं। यों अकेले मोहन जोदड़ों की खुदाई में निकली पंजीकृत चीज़ों की संख्या पचास हज़ार से ज़्यादा है, जिनमें से प्रत्येक सिंधु सभ्यता की उत्कृष्टता की मिसाल है। काले भूरे चित्र, चौपड़ की गोटियाँ, दीये, माप–तौल के पत्थर, ताँबे का आईना, मिट्टी की बैलगाड़ी, अन्य कई प्रकार के खिलौने, दो पाटनवाली चक्की, कंघी मिट्टी के कंगन, रंग–बिरंगे पत्थर के हार और पत्थर के औज़ार। अजायबघर में तैनात चौकीदार ने बताया कि पहले कुछ सोने के आभूषण भी थे जो चोरी हो गए। प्रत्येक वस्तु देखकर दर्शक हैरत में पड जाते हैं। काले पड़ गए गेहूँ, ताँबे और काँसे के बरतन, मुहरें,

वाद्य, चाक पर बने विशाल मृद भांड, अनेक लिपि चिह्न साक्षर सभ्यता के प्रमाण हैं। कुएँ और चाक पर बने बरतनों के अतिरिक्त सब कुछ चौकोर है– बस्तियाँ, कुंड, चौपड़, ठप्पेदार मोहरें, गोटियाँ, तौलने के बाट आदि।सोने की सुइयाँ संभवतः कशीदेकारी के काम आती होगी। सबसे प्रसिद्ध दाढ़ीवाले नरेश की मूर्ति जिसके बदन पर आकर्षक गुलकारीवाला दुशाला भी है, कुछ हाथी दाँत और ताँबे की सुइयाँ भी मिली हैं। खुदाई में प्राप्त नर्तकी की मूर्ति अपने–आप में एक अद्वितीय रचना है। प्रसिद्ध इतिहसकारों ने इसे संसार की तत्कालीन सभ्यताओं की सर्वश्रेष्ठ रचना माना है और कहा है कि इससे उत्तम और कुछ हो ही नहीं सकता।

ग. 'अतीत में दबे पाँव' लेखक के वे अनुभव हैं, जो उन्हें सिंधु घाटी की सभ्यता के अवशेषों को देखते समय हुए थे। इस पाठ में अतीत अर्थात् भूतकाल में बसे सुंदर सुनियोजित नगर में प्रवेशकर लेखक वहाँ की एक–एक चीज़ से अपना परिचय बढ़ाता है, उस सभ्यता के अतीत में झाँककर वहाँ के निवासियों और क्रियाकलापों को अनुभव करता है। वहाँ की एक–एक स्थूल चीज़ से मुखातिब होता हुआ लेखक चकित रह जाता है। वे लोग कैसे रहते थे? यह अनुमान आश्चर्यजनक था। वहाँ की सड़कें, नालियाँ, स्तूप, सभागार, अन्न भंडार, विशाल स्नानागार, कुएँ, कुंड और अनुषन गृह आदि के अतिरिक्त मकानों की सुव्यवस्था देखकर लेखक महसूस करता है कि जैसे अब भी वे लोग वहाँ हैं। उसे सड़क पर जाती हुई बैलगाड़ी से रुनझुन की ध्वनि सुनाई देती है। किसी खंडहर में प्रवेश करते हुए उसे अतीत के निवासियों की उपस्थिति महसूस होती है। रसोई घर की खिड़की से झाँकने पर उसे वहाँ पक रहे भोजन की गंध भी आती है। यदि इन लोगों की सभ्यता नष्ट न हुई होती तो ये पाँव प्रगति के पथ पर निरंतर बढ़ रहे होते और आज भारतीय उपमहाद्वीप महाशक्ति बन चुका होता। मगर दुर्भाग्य से ये प्रगति की ओर बढ़ रहे सुनियोजित पाँव अतीत में ही दबकर रह गए। इसलिए 'अतीत में दबे पाँव' शीर्षक पूर्णतः सार्थक और सटीक है।

घ. 'ऐन फ्रैंक की प्रतिभा और धैर्य का परिचय हमें उसकी डायरी से मिलता है। उसमें किशोरावस्था का उखड़ापन कम और सहज शालीनता अधिक थी। उसकी अवस्था में अन्य कोई भी होता तो विचलित एवं बेचैनी का आभास देता। ऐन ने अपने स्वभाव और अवस्था पर नियंत्रण पा लिया था। वह एक सकारात्मक, परिपक्व और सुलझी हुई सोच के साथ आगे बढ़ रही थी। उसमें कमाल की सहन शक्ति थी। अनेक बातें जो उसे बुरी लगती थीं, उन्हें वह शालीन चुप्पी के साथ बड़ों का सम्मान करने के लिए सहन कर जाती थी। पीटर के प्रति अपने अंतरंग भावों को भी वह सहेज कर केवल डायरी में व्यक्त करती थी। अपनी इन भावनाओं को वह किशोरावस्था में भी जिस मानसिक स्तर से सोचती थी वह वास्तव में सराहनीय है। परिवपक्व सोच का ही परिणाम था कि वह अपने मन के भाव, उद्गार, विचार आदि डायरी में ही व्यक्त करती थी। यदि ऐन में ऐसी सधी हुई परिपक्वता न होती तो हमें युद्ध काल की ऐसी दर्द भरी दास्तान पढ़ने को नहीं मिल सकती थी।

वितान पुस्तक पर अन्य अभ्यास प्रश्नः–

क. यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है, लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं। ऐसा क्यों?
ख. वर्तमान समय में परिवार की संरचना, स्वरूप से जुड़े आपके अनुभव इस कहानी से कहाॅं तक सामंजस्य बिठा पाते हैं?

ग. स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास लेखक के मन में कैसे पैदा हुआ?
घ. कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारणा में क्या बदलाव आया?
ड़. सिंधु सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य बोध है जो राज पोषित या धर्म पोषित न होकर समाज पोषित था। ऐसा क्यों कहा गया?
च. पुरातत्व के किन चिन्हों के आधार पर आप यह कह सकते हैं कि 'सिंधु सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझसे अनुशासित सभ्यता थी'?
छ. 'काश, कोई तो होता जो मेरी भावनाओं को गंभीरता से समझ पाता।अफसोस, ऐसा व्यक्ति मुझे अब तक नहीं मिला......'। क्या आपको लगता है ऐन के इस कथन में उसके डायरी लेखन का कारण छिपा है?
ज. ऐन ने अपनी डायरी 'किट्टी' को संबोधित चिट्ठी की शक्ल में लिखने की जरूरत क्यों महसूस की होगी?